हिन्दी पाठ-योजना

कतिपय नमूने

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
अजमेर

प्राक्कथन

पाठ-संकेतों का प्रस्तुत संकलन इस संस्था के 'सेवा प्रसार विभाग' के तत्वावधान में आयोजित दो कार्य-गोष्ठियों द्वारा संपन्न कार्यों का ही प्रतिफल है। प्रथम कार्यगोष्ठी विगत वर्ष १८ जनवरी से २१ जनवरी तक एवं द्वितीय कार्यगोष्ठी इस वर्ष १८ जनवरी से २० जनवरी तक आयोजित हुई थी। इन कार्यगोष्ठियों में राजस्थान एवं उत्तर-प्रदेश के अनेक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के अनुभवी प्रशिक्षकों ने भाग लिया और हिन्दी शिक्षण संबंधी कुछ पाठ-संकेत भी तैयार किये।

यद्यपि हिन्दी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन एवं अध्यापन के स्तर को उन्नत करने की दृष्टि से प्रशिक्षण संबंधी अनेक समस्याएँ हमारे सामने हैं, किन्तु इन कार्यगोष्ठियों के आयोजन का उद्देश्य उन समस्याओं पर न विचार कर केवल हिन्दी शिक्षण संबंधी पाठ-योजनाओं पर विचार करना और यथासंभव पाठ-संकेत तैयार करना था। इसी सीमित उद्देश्य को लेकर इन कार्यगोष्ठियों में विचार-विमर्श किया गया और उसी आधार पर कतिपय पाठ-संकेत भी तैयार किये गये।

विभिन्न प्रशिक्षण महाविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण संबंधी पाठ-योजनाओं के विभिन्न रूप प्रचलित हैं। इस कारण प्रशिक्षकों एवं प्रशिक्षार्थियों को अनेक उलझनों एवं जटिलताओं का सामना करना पड़ता है। कभी पाठ-विकास के क्रमिक सोपानों को लेकर विवाद होता है तो कभी पाठ्य सामग्री के विविध तत्वों की सापेक्षिक प्रमुखता के प्रश्न को लेकर। प्रशिक्षण संस्थाओं में कभी-कभी तो पाठ-योजना की दृष्टि से पाठ-सोपानों को इतना अधिक महत्व दिया जाता है कि विषय सामग्री उपेक्षित रह जाती है। फलस्वरूप प्रशिक्षण व्यावहारिक एवं उपयोगी नहीं रह जाता और कम महत्व की बातों पर विवाद चला करता है। इस विवाद को दूर करने के लिए भी प्रशिक्षण महाविद्यालयों के अनुभवी हिन्दी प्रशिक्षकों के परस्पर विचार विनिमय की आवश्यकता प्रतीत हुई और इसे दृष्टिगत रखते हुए इन कार्यगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

इस संबंध में यह स्पष्ट कर देना भी आवश्यक प्रतीत होता है कि पाठ योजना संबंधी इस विचार विमर्श एवं पाठ-संकेत निर्माण का आशय यह कदापि नहीं है कि पाठ-योजनाओं अथवा संकेतों में पूर्णतः एकरूपता लाने का प्रयत्न

किया जाय और सर्वत्र एक ही विधि एवं क्रम का पालन किया जाय। ऐसा आग्रह प्रगतिशील शिक्षण कला एवं विज्ञान की दृष्टि से अवांछित ही होगा। हमारा आशय एवं दृष्टिकोण केवल यह है कि जहाँ तक संभव हो, पाठ-योजना का एक सर्वमान्य नहीं तो बहुमान्य रूप सामने आ जाय और उसके द्वारा पाठ्य सामग्री को उपस्थित करने के क्रम एवं शिक्षण प्रक्रिया का विधिवत् रूप भी स्पष्ट हो जाय। इसे स्पष्ट करने के लिए ही इन गोष्ठियों में कुछ पाठ-संकेतों के नमूने प्रस्तुत किये गये हैं। इन्हें आदर्श पाठ संकेत मानना एक भ्रम होगा क्योंकि पाठ-योजनाओं का कोई निरपेक्ष आदर्श असंभव सा है। शिक्षक तथा शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व, उनकी योग्यता, पा सामग्री, कक्षा शिक्षण संबंधी परिस्थितियाँ एवं अन्य सुलभ सुविधाएँ आदि अनेक कारण है, जिनके अनुसार पाठ-योजनाओं में अवश्य भिन्नता होगी और यह विकल्प एवं स्वतंत्रता शिक्षक को अवश्य रहनी भी चाहिए।

पाठ-संकेतों का प्रस्तुत संकलन इस दिशा में नवीन प्रयास है। अनेक कारणों से हम इसे जिस रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे, वह संभव नहीं हो पाया है। ये दोनों गोष्ठियाँ केवल तीन-तीन दिन के लिए ही आयोजित हुई थीं। इनमें सम्मिलित सभी सदस्यों ने यह अनुभव किया कि ऐसे कार्य के लिए और अधिक समय अपेक्षित है। इसी कारण केवल ११ पाठ योजनाएँ प्रस्तुत की जा रही हैं। इन पाठ-योजनाओं में भी विविध प्रकार के पाठों का उचित प्रतिनिधित्व नहीं हो सका है, जो निम्नांकित विवरण से स्पष्ट है—

गद्य २, कविता २, कहानी १, नाटक १, व्याकरण ५।

प्रथम कार्यगोष्ठी में गद्य, कविता, कहानी और नाटक पर पाठसंकेत तैयार किये गये थे। पर सदस्यों को यह अनुभव हुआ कि इतने अल्प समय की गोष्ठी में इन चार विधाओं को लेने से पर्याप्त संख्या में पाठ-संकेत नहीं तैयार हो सकते। हम चाहते थे कि कहानी और नाटक पर भी दो-दो पाठ संकेत तैयार हो जाते, पर समयाभाव से यह पूरा नही हो सका। इस कमी को हम आगे पूरा करने का प्रयत्न करेंगे।

द्वितीय कार्यगोष्ठी के सदस्यों ने अनुभव किया कि हिन्दी शिक्षण के किसी एक विशेष क्षेत्र को हम चुन लें और उसी से संबंधित पाठ-संकेत तैयार करें। फलतः व्याकरण शिक्षण संबंधी ५ पाठ-संकेत तैयार किये गये। इनमें पाठ-संकेत के दो रूप या दो प्रकार के प्रारूप स्पष्टतः परिलक्षित होते हैं और दोनों ही रूप व्यावहारिक एवं उपादेय हैं।

पाठ-संकेतों का यह संकलन हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेशों के सभी हिन्दी प्रशिक्षकों के पास हम इस दृष्टि से भेज रहे हैं कि वे इन पाठ-संकेतों पर समीक्षात्मक दृष्टि से विचार करें और अपने अनुभवों, विचारों एवं सुझावों से हमें अवगत कराते हुए इस प्रयास को सफल बनाने में योग प्रदान करें। उनके सहयोग से ही हम गद्य, कविता, कहानी, नाटक, व्याकरण एवं रचना संबंधी और भी अधिक पाठ-संकेतों का समावेश कर इस संकलन को अधिकाधिक पूर्ण एवं उपयोगी बनाने में सफल हो सकेंगे।

इस गोष्ठी में पाठ-विकास की प्रक्रिया एवं विविध सोपानों के संबंध में जो विचार-विमर्श हुए एवं जो मत-मतान्तर प्रकट किये गये, हम उनका उल्लेख इन पाठ-संकेतों के साथ नहीं कर रहे हैं। ये मत-मतान्तर कुछ सनातन से हो गये हैं—कौन सोपान पहले हो कौन पीछे, व्यक्त पाठ कब हो, मौन पाठ कब हो, एक पाठ में कितनी बार व्यक्त पाठ हो, भाषा कार्य कब हो और किस प्रकार हो, इत्यादि विवादों का उतना महत्व नहीं है जितना इस बात का कि पाठांतर्गत सभी तत्वों से बालकों को सहज एवं स्वाभाविक रूप में परिचित करा दिया जाय और बालक स्वयं पाठ पढ़ने, विषय सामग्री ग्रहण करने के लिए अभिप्रेरित एवं प्रवृत्त हो जायं! हम पाठ संकेतों के नमूने इस दृष्टि से प्रशिक्षकों के सम्मुख रखना चाहते हैं कि वे अपनी स्वतंत्र प्रतिक्रिया प्रकट कर सकें। पाठ-संकेतों के किसी विशेष रूप को ही मान्यता देने या दिलाने का हमारा आग्रह नहीं है। इसी कारण पाठ-संकेतों के आधारभूत सिद्धान्तों का भी उल्लेख इस प्रतिवेदन में नहीं है। सुयोग्य एवं अनुभवी प्रशिक्षकों के मतों एवं प्रतिक्रियाओं को जान लेने पर ही इस प्रतिवेदन को सर्वांगपूर्ण बनाने का प्रयास किया जायगा।

इन कार्यगोष्ठियों के संचालन एवं निर्देशन में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली के श्री अनिल विद्यालंकार एवं आर. बी. प्रशिक्षण महाविद्यालय, आगरा के डॉ० रामशंकर पांडेय ने भी अपना विशेष सहयोग प्रदान किया। उनके अमूल्य परामर्शों एवं सुझावों के लिए हम उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। हम प्रधानाचार्य डॉ० आर. सी. दास के प्रति भी आभारी हैं जिन्होंने इस गोष्ठी के संचालन एवं निर्देशन में अनेक सुझाव दिये और समायोजक डॉ० तेजबहादुर माथुर के प्रति भी हम कृतज्ञ हैं जिन्होंने इसके प्रकाशन में सहायता दी।

निरंजन कुमार सिंह
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर

विषय-सूची

गद्य पाठ योजना (१)

साहित्य की महत्ता

ज्ञानराशि के संचित कोष ही का नाम साहित्य है। सब तरह के भावों को प्रकट करने की योग्यता रखने वाली और निर्दोष होने पर भी यदि कोई भाषा अपना निज का साहित्य नहीं रखती तो वह रूपवती भिखारिन की तरह कदापि आदरणीय नहीं हो सकती। उसकी शोभा, उसकी श्री सम्पन्नता, उसकी मान-मर्यादा उसके साहित्य ही पर अवलम्बित रहती है।

जाति-विशेष के उत्कर्षापकर्ष का, उनके ऊँच नीच भावों का, उसके धार्मिक विचारों और सामाजिक संगठन का, उसकी ऐतिहासिक घटनाओं और राजनीतिक स्थितियों का प्रतिबिम्ब देखने को यदि कहीं मिल सकता है तो उसके ग्रन्थ-साहित्य में मिल सकता है। सामाजिक शक्ति या सजीवता, सामाजिक अशक्ति या निर्जीवता और सामाजिक सभ्यता तथा असभ्यता का निर्णायक एक मात्र साहित्य है। जिस जाति विशेष में साहित्य का अभाव या उसकी न्यूनता आपको दीख पड़े, आप निश्चित समझिये कि वह जाति असभ्य किंवा अपूर्ण सभ्य है।

विषय—**गद्य**

प्रकरण—साहित्य की महत्ता

कक्षा ९

उद्देश्य :

१. भाषा के तत्वों का ज्ञान कराना

(अ) उच्चारण—श्रीसंपन्नता, उत्कर्षापकर्ष, ऐतिहासिक, किंवा, कोष, न्यूनता।

(ब) शब्द भण्डार—ज्ञानराशि, निर्दोष, श्रीसम्पन्नता, अवलम्बित, किंवा, उत्कर्षापकर्ष, न्यूनता।

(क) उपसर्ग—निर्दोष (निर्)

(ख) प्रत्यय—श्रीसम्पन्नता (ता)

(ग) संधि—उत्कर्षापकर्ष (अ + अ = आ)

(घ) समास—ज्ञानराशि (ज्ञान की राशि)

२. विषय वस्तु का ज्ञान कराना

(अ) 'साहित्य ज्ञानराशि का संचित कोष है।' इस कथन के तात्पर्य से छात्रों को अवगत कराना।

(ब) 'भाषा की शोभा, श्रीसम्पन्नता, मान-मर्यादा साहित्य पर अवलंबित है।' इसके महत्व से छात्रों को परिचित कराना।

(स) 'साहित्य का समाज से घनिष्ठ सम्बन्ध है'। इससे छात्रों को अवगत कराना।

३. अर्थ ग्रहण कराना

(अ) आदर्शवाचन एवं अनुकरण वाचन द्वारा प्रस्तुत गद्यांश को सुनकर अर्थ ग्रहण करने की क्षमता को विकसित कराना।

(ब) मौन वाचन और अनुकरण वाचन द्वारा प्रस्तुत गद्यांश के तथ्यों का अर्थ ग्रहण कराना।

(स) विषय वस्तु का अर्थ ग्रहण (अर्थ ग्रहण के अध्ययन बिन्दु)

(क) ज्ञानराशि के संचित कोष का नाम ही साहित्य है।

(ख) जिस जाति विशेष में साहित्य का अभाव या उसकी न्यूनता दीख पड़े, आप निश्चित समझिये कि वह जाति असभ्य किंवा अपूर्ण सभ्य है।

४. अभिव्यक्ति

बोलकर या लिखकर भावों और विचारों की अभिव्यक्ति करने की क्षमता उत्पन्न करने हेतु निम्नांकित तथ्यों की अभिव्यक्ति छात्र करेंगे।

(अ) 'भाषा में साहित्य के अभाव को रूपवती भिखारिन' के कथन पर छात्रों के विचार अभिव्यक्त कराना।

(ब) 'साहित्य-समाज का प्रतिबिम्ब है,' इस तथ्य पर छात्रों को विचार प्रकट करने के लिए प्रेरित करना।

नोट: रचना कार्य—'निः' उपसर्ग से पाँच शब्दों की संरचना कराना।

सहायक सामग्री—कक्षोपयोगी समग्री।

पूर्व ज्ञान— छात्र साहित्य की विविध विधाओं से परिचित हैं और उनका सामान्य ज्ञान रखते हैं।

प्रस्तावना — निम्नांकित गद्यांश के माध्यम से प्रस्तुत की जायगी।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने उत्थान-पतन का इतिहास भाषा के माध्यम से साहित्य में प्रस्तुत करता है। इसी कारण साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है।

प्रश्न 1. मानव जीवन में साहित्य की उपयोगिता क्या है ?

2. साहित्य का समाज से क्या सम्बन्ध है ?

कार्य संकेत— आज हम महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित साहित्य का समाज से क्या सम्बन्ध है इस विषय का अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण—

मुखर वाचन –सर्वप्रथम सुनकर अर्थ ग्रहण करने की दृष्टि तथा सस्वर एवम् सलय विचारानुकुल हाव-भाव सहित उच्चारण करने हेतु अध्यापक मुखर वाचन प्रस्तुत करेगा।

पुनः अर्थ ग्रहण करने की दृष्टि से मुखर वाचन करेगा और अन्य छात्र मुखर वाचन को सुनते हुए मन ही मन पढ़ते रहेंगे।

छात्रों द्वारा मुखर वाचन :

प्रस्तुत गद्यांश का सस्वर सलय प्रभावोत्पादक ढंग से वाचन करेंगे। इसके बाद केन्द्रीय भावों से सम्बन्धित निम्नांकित प्रश्न किए जाएँगे, जिससे कि उनका ध्यान प्रमुख भावों एवं विचारों पर केन्द्रित हो सके।

(1) लेखक ने साहित्य के सम्बन्ध में क्या विचार व्यक्त किए हैं ?

(2) भाषा में साहित्य की क्या उपयोगिता है ?

व्याख्या :

शब्द	अर्थ	अर्थ विधि	व्याख्या, प्रयोग या विस्तार
१. ज्ञान राशि	ज्ञान का भण्डार	सम्बन्ध तत्पुरुष समास द्वारा	
२. निर्दोष	दोष रहित	निः उपसर्ग द्वारा	निर्दोष शब्द में कौनसा उपसर्ग है निः + दोष, निः उपसर्ग का क्या अर्थ है ? (नहीं)
३. श्रीसंपन्नता	ऐश्वर्यशाली वैभव सम्पन्न	प्रत्यय एवं वाक्य प्रयोग द्वारा	श्रीसम्पन्न + ता
४. अवलंबित	निर्भर या आश्रित	वाक्य प्रयोग	भारत की उन्नति खेती-बाड़ी और श्रम पर अवलंबित है ।
५. किंवा	अथवा	स्पष्टीकरण	यह वाक्य संयोजक अव्यय है
६. उत्कर्षापकर्ष	उत्थान-पतन	युग्म	शब्दान्तर उन्नत-अवनत् ऊँच-नीच
७. न्यूनता	कम से कम	विलोम द्वारा	अधिकता

मौन वाचन :—विचारों के ग्रहण करने हेतु छात्र ध्यानस्थ होकर प्रस्तुत गद्यांश का मौन वाचन करेंगे ताकि वे विचार विश्लेषणात्मक या विवेचनात्मक प्रश्नों को समझकर उनके सही उत्तर दे सकें ।

विवेचनात्मक प्रश्न :

(१) साहित्य किसे कहते हैं ? (२) कोष किसे कहते हैं ?
(३) साहित्य को ज्ञान राशि का कोष क्यों कहा गया है ?

अध्यापक कथन :—मानव जाति के उत्थान और पतन और उनके अनुभवों की कहानी साहित्य की विविध विधाओं में अंकित की जाती है । इसलिए साहित्य को ज्ञान राशि का कोष कहा जाता है ।

(१) यहाँ भिखारिन किसे कहा गया है ?
(२) भाषा को भिखारिन क्यों कहा गया है ?
(३) रूपवती भिखारिन को सम्मान क्यों नहीं मिलता ?
(४) ऐसी भाषा की उपमा रूपवती भिखारिन से क्यों दी गई है ?

(५) साहित्य के द्वारा भाषा के किन गुणों की अभिवृद्धि होती है ?
(६) भाषा की शोभा से आप क्या समझते हैं ?
(७) किस भाषा को हम श्री सम्पन्न कहते हैं ?
(८) भाषा की मान मर्यादा किसे कहते हैं ?
(९) साहित्यिक ग्रन्थों में किनका प्रतिबिम्ब दिखाई देता है ?
(१०) साहित्य को किन बातों का निर्णायक कहा गया है ?
(११) कौन सी जाति को असभ्य एवं अपूर्ण माना गया है ?

अनुमूल्यन (या पुनरावृत्ति)

१. साहित्य विहीन भाषा को रूपवती भिखारिन की संज्ञा दी गई है क्योंकि—
(क) साहित्य से भाषा की शोभा, श्रीसम्पन्नता और मानमर्यादा बढ़ती है।
(ख) वह भाषा अपना निज का साहित्य नहीं रखती।
(ग) उसमें भावों को प्रकट करने की योग्यता का अभाव होता है ?
(घ) साहित्य के अभाव में जाति असभ्य किंवा अपूर्ण सभ्य होती है ?

२. साहित्य में समाज की समस्त स्थितियों का प्रतिबिम्ब मिलता है, ऐसा इसलिए माना जाता है क्योंकि —
(क) उसमें केवल जाति विशेष के उत्कर्षापकर्ष का वर्णन रहता है ;
(ख) उसमें केवल ऊँच-नीच भावों और धार्मिक विचारों की प्रधानता होती है ;
(ग) उसमें केवल ऐतिहासिक घटनाओं और राजनैतिक स्थितियों का प्रतिबिम्ब होता है ;
(घ) साहित्य समाज का दर्पण होता है ?

३. समाज के लिए साहित्य का क्या महत्व है ?

४. नि:उपसर्ग से पाँच शब्दों की स्वयं रचना कीजिये।

गद्य पाठ योजना (२)

स्मृति

सन् १६०८ ई० की बात है। दिसम्बर का आखीर या जनवरी का प्रारम्भ होगा। चिल्ला जाड़ा पड़ रहा था। दो-चार दिन पूर्व बूँदा-बाँदी हो गई थी, इसलिए शीत की भयंकरता और भी बढ़ गई थी। सायंकाल के साढ़े तीन या चार बजे होंगे। कई साथियों के साथ में झरबेरी के बेर तोड़-तोड़ कर खा रहा था कि गाँव के पास से एक आदमी ने जोर से पुकारा कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं; शीघ्र ही घर लौट आओ! मैं घर को चलने लगा। साथ में छोटा भाई भी था। भाई साहब की मार का डर था, इसलिए सहमा हुआ चला जाता था। समझ में नहीं आता था कि कौन सा कसूर बन पड़ा है। डरते डरते घर में घुसा। आशंका थी कि बेर खाने के अपराध में ही तो पेशी न हो। पर आँगन में भाई साहब को पत्र लिखते पाया। अब पिटने का भ्रम दूर हुआ। हमें देखकर भाई साहब ने कहा—"इन पत्रों को ले जाकर मक्खनपुर डाकखाने में डाल आओ। तेज़ी से जाना जिससे शाम की डाक में ही चिट्ठियाँ निकल जाएँ। ये बड़ी जरूरी हैं।"

जाड़े के दिन थे ही, तिस पर हवा के प्रकोप से कँपकँपी लग रही थी। हवा मज्जा तक ठिठुरा रही थी इसलिए हमने कानों को धोती से बाँधा। माँ ने भुनाने के लिए चने एक धोती में बाँध दिए। हम दोनों भाई अपना अपना डंडा लेकर घर से निकल पड़े। उस समय उस बबूल के डंडे से जितना मोह था, उतना इस उमर में रायफल से नहीं। मेरा डंडा अनेक साँपों के लिए नारायण-वाहन हो चुका था। मक्खनपुर के स्कूल और गाँव के बीच पड़ने वाले आम के पेड़ों से प्रतिवर्ष उससे आम झूरे जाते थे। इस कारण वह मूक डंडा सजीव-सा प्रतीत होता था! प्रसन्नवदन हम दोनों मक्खनपुर की ओर तेज़ी से बढ़ने लगे। चिट्ठियों को मैंने टोपी में रख लिया, क्योंकि कुर्ते में जेबें न थीं।

कक्षा ७

प्रकरण—स्मृति

उद्देश्य—

१. भाषा के तत्वों का ज्ञान कराना

(क) उच्चारण—आशंका, कँपकँपी, प्रसन्नवदन

(ख) शब्द भण्डार—चिल्ला जाड़ा, सहमा हुआ, पेशी, आशंका, भ्रम तिस पर, प्रकोप, प्रसन्नवदन, मज्जा, ठिठुरा रही थी, उमर, नारायण-वाहन, झूरे जाते थे, सजीव, मूक डंडा।

देशज शब्द—चिल्ला जाड़ा, तिस पर, उमर, घुसा, झूरे जाते थे

विदेशज शब्द—पेशी, मज्जा

उपसर्ग—प्रकोप, सजीव (प्र, स)

मुहावरे—चिल्ला जाड़ा, झूरे जाते थे

समास—नारायण-वाहन

वाक्य प्रयोग—भ्रम

शब्द विश्लेषण— प्रसन्नवदन

२. विषय वस्तु का ज्ञान कराना

(क) शीतकालीन स्थिति का वर्णन

(ख) ग्राम जीवन की स्मृति

(ग) पारिवारिक जीवन की स्मृति

(घ) पारिवारिक कार्य करने की तत्परता

३. विधा का ज्ञान कराना

संस्मरण (वर्णनात्मक लेख)

अर्थ ग्रहण—

सुनकर तथा पढ़कर—मौनवचन, आदर्शवाचन, अनुकरणवचन, बोध प्रश्न

विषय वस्तु का अर्थ ग्रहण :

प्रकृति (क) चिल्ला जाड़ा पड़ रहा था,

(ख) बूँदा-बाँदी हो गई थी,

(ग) शीत की भयंकरता बढ़ गई थी।

शब्द चित्र

(क) झरबेरी के बेर तोड़ तोड़कर खा रहा था,

(ख) गाँव के पास से एक आदमी ने ज़ोर से पुकारा,

(ग) सहमा हुआ चला जाता था,

(घ) डरते डरते घर में घुसा ।

जीवन गत अनुभुतियाँ

(क) हवा मज्जा तक ठिठुरा रही थी

ख) उस समय उस बबूल के डण्डे से जितना मोह था, उतना इस उमर में रायफल से नहीं

भाषा सौन्दर्य :

(क) मेरा डण्डा अनेक साँपों के लिये नारायण-वाहन हो चुका था ।

(ख) वह मूक डण्डा सजीव-सा प्रतीत होता था ।

अभिव्यक्ति :

बोलकर— (क) झरबेरी के बेर तोड़कर खाते समय लेखक के मन में अपने बड़े भाई के बुलाने पर होने वाली प्रतिक्रिया,

(ख) पत्र डालने के लिये जाते समय होने वाली कठिनाइयाँ, ऐसी परिस्थिति में छात्रों के मन में होने वाली प्रतिक्रियाओं का उन्हें अनुमान कराना ।

(ग) लेखक के जीवन में मूक डण्डे की सजीवता ।

सहायक सामग्री —कक्षोपयोगी

पूर्वज्ञान—छात्रों ने वर्णनात्मक लेख पढ़ रखे हैं ।

प्रस्तावना—अपने जीवन की कोई मनोरंजक घटना सुनाइयें ।

प्रस्तुतीकरण :

बालकों के सुनाने पर शिक्षक 'स्मृति' नामक संस्मरण से उसका संबंध जोड़ेगा ।

मौन वचन :

विचारों को ग्रहण करते हुए छात्र ध्यान पूर्वक मौन पाठ करेंगे ।

बोध प्रश्न एवं विचार विश्लेषण :

(१) चिल्ला जाड़ा किसे कहते हैं ?

(२) बूँदा-बूँदी से तुम क्या समझते हो ?

(३) लेखक ने शीत की भयंकरता का वर्णन किस प्रकार किया है ?

(४) लेखक साथियों के साथ क्या तोड़-तोड़कर खा रहा था ?

(५) उसे घर क्यों जाना पड़ा ?

(६) घर जाते समय वह क्यों सहमा हुआ था ?

(७) लेखक के भाई ने उसे क्या काम करने को दिया ?

(८) हवा के प्रकोप से लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(९) मज्जा के ठिठुरने का क्या अर्थ है ?

(१०) माँ ने चिट्ठी डालने के साथ-साथ और कौन सा काम दे दिया ?

(११) जब हम एक काम को जाते हैं और दूसरा काम भी कर लेते हैं तो उसे मुहावरे में क्या कहते हैं ?

(१२) 'उस बबूल के डण्डे से जितना मोह था, उतना रायफल से नहीं' लेखक ने ऐसा क्यों कहा ?

(१३) नारायण-वाहन से क्या तात्पर्य है ?

(१४) गरुण की क्या विशेषता है ?

(१५) डण्डे से और क्या काम लिया जाता था ?

(१६) लेखक ने चिट्ठियाँ टोपी में क्यों रख लीं ?

आदर्श पाठ—शिक्षक द्वारा

व्यक्त पाठ—छात्रों द्वारा

अनुमूल्यन या पुनरावृत्ति के प्रश्न—

(१) लेखक ने अपने संस्मरण में शीत की भयंकरता का वर्णन किन शब्दों में किया है ?

(२) भाई के बुलाने पर लेखक क्यों सहम गया ?

(३) उसने चिट्ठी डालने जाने के लिए रास्ते में कानों को धोती से क्यों बाँध लिया था ?

(४) उसे बबूल के डण्डे से इतना अधिक मोह क्यों था ?

(५) लेखक ने डण्डे को नारायण-वाहन क्यों कहा है ?

श्याम पट्ट कार्य—बूँदा-बूँदी

हवा का प्रकोप

एक पंथ दो काज

नारायण-वाहन

गृह-अभ्यास—तुम अपना कोई रोचक संस्मरण लिखकर लाओ।

कविता पाठ योजना (१)

प्रकरण : **'मेरा जीवन'** (सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित)

मैंने हँसना सीखा है
मैं नहीं जानती रोना।
बरसा करता पल पल पर
मेरे जीवन में सोना।

मैं अब तक जान न पाई
कैसी होती है पीड़ा ?
हँस-हँस जीवन में कैसे
करती है चिन्ता क्रीड़ा ?

जग है 'असार' सुनती हूँ
मुझको सुख सार दिखाता।
मेरी आंखों के आगे
सुख का सागर लहराता।

कहते हैं होती जाती
खाली जीवन की प्याली।
पर मैं उसमें पाती हूँ
'प्रतिपल' मदिरा मतवाली।

उत्साह उमंग निरन्तर
रहते मेरे जीवन में !
'उल्लास' विजय का हँसता
मेरे मतवाले मन में।

आशा आलोकित करती
मेरे जीवन का प्रतिक्षण।
है स्वर्ण-सूत्र से 'वलयित'
मेरी असफलता का 'घन'।

सुख भरे सुनहले बादल
रहते हैं मुझको घेरे।
विश्वास, प्रेम, साहस है
जीवन के साथी मेरे।

विषय — कविता

प्रकरण — मेरा जीवन

कक्षा ८

विशिष्ट उद्देश्य :

१. **ज्ञानात्मक** :—कवयित्री श्रीमती सुभद्राकुमारी के विषय में सामान्य परिचय।

२. **कौशल** :—छात्रों द्वारा 'मेरा जीवन' नामक कविता का सलय, सस्वर एवं आरोह अवरोह के साथ वाचन करना।

३. **अर्थ ग्रहण** :—(क) कविता में वर्णित भावों को समझना। यथा, जीवन को सुखमय देखना, अभाव में भी सुख की अनुभूति करना, आशावादिता, विश्वास, प्रेम एवं साहस को सुख का साधन मानना।

(ख) कविता के केन्द्रीयभाव को समझना, यथा, जीवन को सुखमय देखते हुए आशावादी दृष्टिकोण अपनाना।

४. **श्लाघात्मक** :—(१) उक्त कविता में पदलालित्य एवं प्रवाह की अनुभूति करना—

पदलालित्य (अ) बरसा करता मेरे जीवन में प्रतिपल सोना।

(आ) सुख का सागर लहराता

(इ) खाली जीवन की प्याली.

(ई) उल्लास विजय का हँसना

(उ) स्वर्ण सूत्र से वलयित मेरी असफलता का घन

(ऊ) सुखभरे सुनहले बादल रहते हैं घेरे

(२) तुकान्त पदों के ज्ञान द्वारा भाषा सौन्दर्य की अनुभूति।

(३) कविता में निहित सुखमय जीवन एवं आशावाद की अनुभूति।

(४) जीवन में उत्साह, उमङ्ग, प्रेम, विश्वास आदि उत्तम भावों द्वारा सुख की प्राप्ति की कल्पनाऐं करना।

५. **सद्प्रवृति** : दुःख में सुख की अनुभूति करना।

६. **रुच्यात्मक** : काव्य रसास्वादन की ओर रुचि जाग्रत करते हुए सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य के प्रति रुचि बढ़ाना।

पूर्वज्ञान :—छात्र जीवन के सुख-दुःखों से सामान्यतया परिचित हैं।

उत्प्रेरणा :– (कविता द्वारा)

भार अब ढोया न जाता।
बहुत सोया शूल की सेजों पै, अब सोया न जाता ।।
फूल भी चूमे, हृदय से क्षार भी हमने लगाए।
जग की कटुता पर हमारे नयन बरबस उमड़ आए ।।
फट पड़े आकाश सिर पर, फिर उसे कैसे सभालूं।
और प्यारे आँसुओं से घाव अब धोया न जाता ।।
भार अब ढोया न जाता।

प्रश्न	उत्तर
१. इस कविता में कवि ने क्या मुख्य बात कही है ?	भार अब ढोया न जाता ; आपत्ति टूट पड़ी है, यह संभलती नहीं है।
२. भार अब ढोया न जाता, फट पड़े आकाश सिर पर' आदि बातों से कवियत्री जीवन का कौनसा रूप दिखाना चाहती है ?	जीवन दु:खमय है और दु:खों से पार पाना संभव प्रतीत नहीं होता है ?
३. इसके विपरीत दूसरा रूप क्या हो सकता है ?	जीवन सुखमय है एवं आशा से भरा हुआ है।
४. इस प्रकार की कोई कविता सुनाइये जिसमें कवि ने सुख एवं आशा पूर्ण जीवन को चित्रित किया है ?	(निरुत्तर)

पाठ्याभिसूचन :—आज हम सुख,-दुख, आशा-निराशा से ही संबंधित श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान द्वार रचित 'मेरा जीवन' नामक कविता का रसास्वादन करेंगे, जिसमें कवयित्री ने जीवन को सुखमय एवं आशा पूर्ण रूप में चित्रित किया है।

प्रस्तुतीकरण :

आदर्शवाचन :—अध्यापक द्वारा संपूर्ण कविता का सस्वर, सलय एवं आरोह अवरोह के साथ सुस्पष्ट वाचन।

शब्दार्थ प्रकाशन—(लपेट पट पर)

असार = सार रहित, थोथा	आलोकित करना = प्रकाशित करना
प्रतिपल = प्रतिक्षण	वलयित = घिरा हुआ
उल्लास = खुशी, हर्ष	घन = बादल

[नोट—शब्दार्थ प्रकाशन के पद को रखने की आवश्यकता होने पर ही इस पद को रखा जावे। यदि रखा जावे तो छात्रों को शब्दार्थ उतारने के लिए अवसर अवश्य दिया जावे।]

पुनः आदर्श पाठ कविता के भावों को स्पष्ट करने हेतु हावभाव सहित कविता का पुनः पाठ।

अनुकरण पाठ—छात्रों द्वारा कविता का सलय सस्वर एवं आरोहावरोह सहित अनुकरण पाठ।

भावविश्लेषण :

(१) 'कवयित्री' अपने जीवन को कैसा मानती हैं ?

(२) संसार के साधारण लोग जीवन को कैसा समझते हैं ?

(३) 'कहते हैं होती जाती, खाली जीवन की प्याली'— यहाँ जीवन की प्याली खाली होती जाने से क्या तात्पर्य है ?

(४) वही वस्तु कवयित्री के मन में क्या भाव उत्पन्न कर रही है ?

(५) कवि के मतवाले मन में अन्य कौन कौन से भाव उठते रहते हैं ?

(६) कवयित्री दुःख में भी सुख का अनुभव करती हैं इस विचार को उन्होंने किस प्रकार स्पष्ट किया है ?

(७) कवयित्री के वे जीवन के साथी कौन कौन से हैं जो उन्हें जीवन में दुःख का अनुभव नहीं होने देते ?

सौन्दर्यानुभूति :

भाषा सौन्दर्य :

(१) (प्रथम पद्य को पढ़कर)—इसमें उन शब्दों को बतलाइये जिनके द्वारा तुक का मिलना ज्ञात होता हो ? (रोना, सोना; पीड़ा, क्रीड़ा)

(२) इसी प्रकार के अन्य शब्द और कहाँ पर आये हैं ?

(दिखाना, लहराना ; प्याली, मतवाली)

(३) (तीसरा पद्य पढ़कर) इसकी प्रथम पंक्ति में 'जग है असार सुनती हूँ' के स्थान पर 'जग है थोथा सुनती हूँ' पढ़ा जावे तो सुनने में यह कैसा मालूम होगा ?

(उतना अच्छा नहीं)

(४) किस वर्ण की आवृत्ति के कारण यह अच्छा मालूम होता है ।

(स, स की आवृत्ति के कारण)

(५) इसी प्रकार वर्णों की आवृत्ति और कहाँ कहाँ हुई है ?

भाव सौन्दर्य :

(१) 'मैंने हँसना सीखा है, मैं नहीं जानती रोना'—इसी भाव को कवि ने और किन दूसरे शब्दों में रखा है ?

(तीसरी, चौथी पंक्तियाँ)

(२) 'जीवन में व्यथाएँ मनुष्य को घेरे रहती हैं'—इस विषय में कवि ने किन शब्दों में आश्चर्य प्रकट किया है ?

(जग ....लहराता)

(अध्यापक द्वारा यथावश्यक स्पष्टीकरण)

(३) संसार के विषय में जो कुछ सुना जाता है वह असत्य प्रतीत होता है। यह भाव किस पद्य में मिलता है ? (उसे पढ़ कर समझाओ)

(जग है असार............लहराता)

(४) लोग जीवन को नीरस मान कर दुःख का अनुभव करते हैं किन्तु कवयित्री उसमें आनन्द का अनुभव करती है- यह भाव कवयित्री के किन शब्दों में व्यक्त होता है ?

(प्रतिपल मदिरा मतवाली)

(५) कवयित्री के जीवन को मधुर बनाने में किन-किन भावों ने सहयोग दिया है ?

(उत्साह, उमङ्ग)

(६) 'हे स्वर्ण सूत्र से वलयित मेरी असफलता के घन'—इन पंक्तियों में स्वर्ण सूत्र और घन किस भाव के द्योतक हैं ?

(सुख की आभा और दुःख)

(अध्यापक द्वारा यथावश्यक स्पष्टीकरण)

(७) किन गुणों को जीवन का साथी बनाने पर मनुष्य दुःख के स्थान पर सुख की अनुभूति करता है ?

(विश्वास, प्रेम, साहस)

[नोट :—कुछ लोगों की सम्मति में भाव विश्लेषण और सौन्दर्यानुभूति को पृथक न रखकर सम्मिलित रूप में रखना ही उचित है।]

तुलनात्मक कविता : उचित कविता मिलने पर समीक्षात्मक दृष्टिकोण से उसे रखना उचित्त होगा। इसके स्थान में अथवा इसके अलावा पंक्तियों में जहां भी तुलना सम्भव हो वहाँ प्रस्तुत करना उपयुक्त होगा।

मूल्यांकन :

(१) उन पंक्तियों को पढ़िये जिनमें कवयित्री जीवन को निरन्तर सुख का स्रोत मानती है।

(२) 'चिन्ता पीड़ा क्या होती यह अबोध शिशु क्या जाने ?'—इससे मिलता हुआ भाव कवयित्री ने किस प्रकार प्रकट किया है ?
(उक्त पंक्तियों को पढ़िए)

(३) 'अभाव को देखकर दु:खी न होना किन्तु उससे अधिकाधिक सुख प्राप्त करना ही जीवन का रहस्य है।' इसकी पुष्टि कवयित्री ने किन शब्दों में की है ?

(४) सुख दु:ख को घेरे हुए रहता है। इस प्रकार का भाव बतलाकर कवि ने किस बिचार धारा की ओर संकेत किया है ?

(५) निम्नलिखित 'क' और 'ख' भागों में कुछ पदों का उल्लेख किया गया है। क खण्ड का ख खण्ड के उचित भाग से योग करके पदों को पूर्ण कीजिये और उचित क्रमाक्षर को 'क' खण्ड के सामने लिखिये।

खण्ड 'क'	**खण्ड 'ख'**
१. सुख भरे	१. साथी मेरे
२. विश्वास प्रेम	२. मुझ को घेरे
३. रहते है	३. सुनहले बादल
४. जीवन के	४. साहस है

६. ऐसी अन्य कविता लिखकर लाइये जिसमें कवि ने इसी प्रकार का दृष्टिकोण अपनाया हो।

कविता पाठ-योजना (२)

हिमालय के आँसू

धर्म ने चाहा भ्रमित नर का अँधेरा पथ बदल दे,
कर्म ने चाहा हृदय की राह के काँटे कुचल दे।
ज्ञान की गङ्गा बही, इसके कलुष पर धुल न पाए,
अनसुनी कर बढ़ गया वह दम्भ की ग्रीवा उठाए।
राम का पौरुष जगा, घनश्याम की गीता जगी थी,
स्नेह का वरदान ले राधा जगी, सीता जगी थी।

बुद्ध, गाँधी की तपस्या, सूर-तुलसी का तराना,
खाल खिचवा दी इसे 'तबरेज' ने चाहा जगाना।
युद्ध हिंसा, पाशविकता का, घृणा का क्रम न बदला,
चढ़ गए सूली सहज ईसा मगर आदम न बदला।
निर्वसन तन पर वसन, पर मन अभी तक निर्वसन है,
नग्न प्राणों पर न कोई भव्यता का आवरण है।

तर्क है, श्रद्धा नहीं, विश्वास का सम्बल नहीं है,
आदमी के पास पावन प्यार का आँचल नहीं है।
रो रहे हो तुम हिमालय! घाव कुछ ज्यादा हरे हैं,
सृष्टि के शव पर तुम्हारे अश्रु अक्षत से झरे हैं।
पर हिमालय! ओ पुरातन विश्व मानव के पुजारी!
व्यर्थ जाएगी नहीं सम्वेदना निश्छल तुम्हारी।
आज भी मेरा अटल विश्वास, आएगा सवेरा,
जगमगाएगा नये आलोक से आकाश तेरा।

विषय—हिन्दी (पद्य)

प्रकरण—'हिमालय के आँसू'

कक्षा ८

विशिष्ट उद्देश्य :

अर्थग्रहण : (१) कविता में वर्णित विशिष्ट भावाभिव्यंजित स्थलों को स्पष्ट

करना, यथा — दम्भ की ग्रीवा, निर्वसन, पाशविकता, भव्यता का आवरण, प्यार का आँचल, अक्षत, सम्वेदना, निश्छल।

(२) कविता के केन्द्रीय भाव, नैतिक मूल्यों एवं प्रेरणास्पद संदेशों से छात्रों को परिचित करना यथा —

(क) धर्म, कर्म एवं ज्ञान द्वारा मानव जीवन का उत्कर्ष एवं उदात्तीकरण।

(ख) प्राचीन महापुरुषों—राम, कृष्ण, बुद्ध, गाँधी, ईसा आदि द्वारा दिये गए मानव जीवन के प्रति सन्देश।

(ग) मानव जीवन में श्रद्धा एवं विश्वास का महत्व।

(घ) सुन्दर भविष्य के प्रति आशावादी दृष्टिकोण।

(३) श्लाघात्मक : कविता में पद लालित्य, ओज एवं प्रवाह की दृष्टि से मर्मस्पर्शी स्थलों की अनुभूति कराना—

(क) "ज्ञान की गङ्गा बही, इसके कलुष पर धुल न पाए।
अनसुनी कर बढ़ गया यह दम्भ की ग्रीवा उठाए।।"

(ख) "युद्ध, हिंसा, पाशविकता का, घृणा का क्रम न बदला।"

(ग) "आदमी के पास पावन प्यार का आँचल नहीं है।"

(घ) "रो रहे हो तुम हिमालय! घाव कुछ ज्यादा हरे हैं।"

(ङ) "आज भी मेरा अटल विश्वास आएगा सबेरा।"

(४) कौशल : छात्रों में कविता को सलय, सस्वर एवं भावानुकूल वाचन करने की क्षमता विकसित करना।

सहायक सामग्री : कक्षोपयोगी सामग्री।

पूर्व ज्ञान : सामान्यतः छात्र जानते हैं कि जब जब देश में अधर्म एवं अनाचार में वृद्धि हुई है, अवश्य ही किसी न किसी महापुरुष का जन्म हुआ है और उन्होंने देशवासियों का कष्ट दूर करने के लिए अपने प्राणों की बलि तक दे दी है।

उत्प्रेरणा : भारत की सभ्यता एवं संस्कृति अत्यन्त प्राचीन एवं महान् है परन्तु आज वह अवनति की ओर जा रही है। हिमालय, भारत का सजग प्रहरी होने के नाते, इसका साक्षी है। इसीलिए वह देश की दुर्दशा पर दुःखी होता है।

प्रस्तुतीकरण : आज हम श्री आनन्द मिश्र द्वारा लिखित 'हिमालय के आँसू' नामक कविता का रसास्वादन करेंगे जिसमें कवि ने हिमालय के दुःख की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हुए अन्त में सुखद भविष्य के आगमन की आशा प्रकट की है।

आदर्श पाठ : अध्यापक द्वारा ।

प्रथम अनुभूति के प्रश्न :

१. हिमालय आँसू क्यों बहा रहा है ?

(दुःखी है)

२. उसके दुःख का क्या कारण है ?

(मनुष्य में प्रेम, श्रद्धा का अभाव)

३. हिमालय के आँसुओं से दुःखी कवि भविष्य में किस बात की आशा प्रकट करता है ?

(सुखद युग के आगमन की)

आदर्श पाठ : अध्यापक द्वारा ।

भाषा सौन्दर्य एवं भाव विश्लेषण :

१. धर्म ने क्या चाहा ?

(भ्रमित नर का अंधेरा पथ बदलना)

२. 'भ्रमित नर' से क्या तात्पर्य है ?

(अज्ञानी लोग)

३. 'अंधेरा पथ बदलने' से क्या तात्पर्य है ?

(अज्ञानी लोगों को ज्ञान का मार्ग दिखाना)

४. कर्म ने क्या चाहा ?

(हृदय की राह के काँटे कुचलना)

५. 'हृदय की राह के काँटे' से आप क्या समझते है ?

(सद्वृत्तियों, के विकास में बाधाएँ)

शिक्षिका कथन : मनुष्य में अच्छी एवं बुरी दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ होती हैं। जिस प्रकार काँटे राह पर बढ़ने में बाधक होते हैं उसी प्रकार बुरी प्रवृत्तियाँ कर्म में बाधक होती हैं।

६. इस कविता में कवि ज्ञान की किस गङ्गा के बहने की ओर संकेत कर रहा है ?

(अनेक ज्ञानियों ने ज्ञान दिया)

७. ऐसे कुछ ज्ञानियों के नाम बताइये जिन्होंने भारत को ज्ञान दिया ।

(बुद्ध, गाँधी, ईसा आदि)

८. ज्ञान की गङ्गा बहने पर भी किसका कलुष नहीं धुला ?

(मनुष्य का)

९. 'कलुष' का क्या अर्थ है ?

(पाप या दुर्गुण)

१०. मनुष्य के कलुष क्यों नहीं समाप्त हुए ?

(वह ज्ञान-मार्ग पर नहीं चला)

११. 'दम्भ की ग्रीवा' से क्या अभिप्राय है ?

(मिथ्याभिमान)

१२. 'राम का पौरुष' जगने से क्या अभिप्राय है ?

शिक्षिका कथन : राम द्वारा किये गये वीरता एवं पराक्रम सम्बन्धी कार्यों की प्रेरणाएँ ।

१३. राम का पौरुष किस के विरुद्ध जगा था ?

(रावण के विरुद्ध)

१४. रावण किस बात का प्रतीक है ?

(मिथ्याभिमान एवं अधर्म का)

१५. 'घनश्याम की गीता जगने' से क्या अभिप्राय है ?

(कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था)

१६. कृष्ण ने किसे और क्यों उपदेश दिया ?

(अर्जुन को)

शिक्षिका कथन : श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश देकर कर्म के लिए प्रेरित किया था क्योंकि वे अपने सगे सम्बन्धियों से युद्ध नहीं करना चाहते थे ।

१७. राधा एवं सीता ने विश्व को किसका वरदान दिया था ?

(प्रेम एवं स्नेह का)

१८. बुद्ध एवं गाँधी की तपस्या का क्या कारण था ?

शिक्षिका कथन : देश में युद्ध एवं हिंसा के विरुद्ध प्रेम और अहिंसा की भावना उत्पन्न करने के लिए ।

१९. सूर एवं तुलसी ने किस प्रकार के गीत गाए ?

(भक्ति के)

२०. 'तबरेज' कौन थे ? उन्होंने अपनी खाल क्यों खिंचवाई ?

शिक्षिका कथन : तबरेज ईरान के महान सन्त थे । वहाँ के राजा ने इनकी जीवितावस्था में खाल खिंचवा ली पर यह अपने धर्म पर अटल रहे ।

२१. 'पाशविकता' का क्या अर्थ है ?

(बर्बरता या अमानुषिक वृत्तियाँ घृणा द्वेष आदि)

२२. युद्ध, हिंसा एवं घृणा आदि क्यों नहीं समाप्त हुए ?

(मनुष्य के मिथ्याभिमान के कारण)

२३. ईसा को सूली पर क्यों चढ़ाया गया ?

(प्रेम का सन्देश देने के कारण)

२४. 'आदम' का क्या अर्थ है ?

(आदमी)

२५. हम अपने शरीर को किस वस्तु से ढँकते हैं ? (वस्त्र से)

२६. 'मन के वसन' क्या क्या हैं ?

(प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, करुणा)

शिक्षिका कथन : मन के वस्त्र करुणा, प्रेम, श्रद्धा आदि गुण हैं। मनुष्य ने अपने शरीर को तो सुन्दर वस्त्रों से ढँक लिया है, परन्तु उसका मन अभी तक नग्न है अर्थात् उसमें घृणा, हिंसा आदि पाशविक वृत्तियों की प्रधानता है। उसने अपने मन पर श्रद्धा, करुणा एवं प्रेम रूपी वस्त्र नहीं धारण किए हैं।

२७. आज मनुष्य में किन गुणों का अभाव है ?

(श्रँद्धा, विश्वास एवं प्रेम)

शिक्षिका कथन : वर्तमान युग विज्ञान का है। अत: मनुष्य तर्क का सहारा अधिक लेता है, उसमें श्रद्धा, विश्वास एवं प्रेम का अभाव है।

२८. हिमालय क्यों रो रहा है ?

(दु:ख के कारण)

२९. 'घाव हरे होना' से क्या तात्पर्य है

(दु:ख नया है)

३०. कवि ने सृष्टि की तुलना किससे की है ?

(शव से)

३१. हिमालय के आँसुओं की तुलना कवि किससे करता है ?

(अक्षत से)

शिक्षिका कथन : यहाँ कवि सृष्टि की तुलना शव से कर रहा है क्योंकि वह अपनी मनुष्यता भूल गया है, इसलिए वह मुर्दे के समान है। जिस प्रकार अग्नि में अक्षत (चावल) डालते हैं, उसी प्रकार इस सृष्टि के शव पर हिमालय के अश्रुरूपी अक्षत पड़ रहे हैं।

३२. कवि ने हिमालय को किस नाम से संबोधित किया है ?

(विश्व मानव का पुजारी)

३३. 'विश्व मानव का पुजारी' से क्या तात्पर्य है ?

(मनुष्यता को पूजने वाला)

३४. 'सम्वेदना' एवं 'निश्छल' के क्या अर्थ हैं ?

(सहानुभूति एवं कपट रहित)

३५. हिमालय की सम्वेदना व्यर्थ क्यों नहीं जाएगी ?

(वह निस्वार्थ होकर सबकी भलाई चाहता है)

३६. कवि किस बात की आशा प्रकट करता है ?

(सवेरा आएगा)

३७. 'सवेरा' से क्या तात्पर्य है ?

(सुखद युग का आगमन)

३८. "जगमगाएगा नये आलोक से आकाश तेरा।" से क्या तात्पर्य है ?

शिक्षिका कथन : इस समय मनुष्य में घृणा, द्वेष, हिंसा आदि पाशविक वृत्तियों की प्रधानता हो रही है, श्रद्धा प्रेम एवं अहिंसा के भाव समाप्त प्राय हैं। हिमालय इसी कारण आँसू बहा रहा है ? परन्तु कवि आशावादी है, उसे विश्वास है कि एक दिन अवश्य ही मनुष्य धर्म, कर्म एवं ज्ञान के मार्ग पर चलेगा जिससे सुखद भविष्य का आगमन होगा।

आदर्श पाठ : अध्यापक द्वारा।

अनुकरण पाठ : छात्रों द्वारा।

एकांकी पाठ-योजना

विषय—एकांकी

प्रकरण - गिरती दीवारें (उदय शंकर भट्ट—कृत)

कक्षा ६

पूर्व्य उद्देश्य

१. भाषा के तत्वों का ज्ञान प्राप्त कराना यथा—

(अ) उच्चारण	पूर्वज प्रतिक्षा	अपेक्षित परिवर्तन
(ब) वर्तनी	अस्तव्यस्त मूच्छित	पहचान
(स) नए शब्दों का अर्थ ज्ञान	परम्परा, अनर्थ प्रपितामह	प्रत्यास्मरण
(द) उपसर्ग का सामान्य ज्ञान	निराहार	उदाहरण विश्लेषण तथा संश्लेषण
(य) मुहावरा ज्ञान	(स्वप्न भंग करना	

२. विषय वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना

तथ्य एवं घटनाएँ

(अ) परिवार की प्रथाओं का अनुसरण	पहचान
(ब) भयंकर स्वप्नों पर विश्वास	प्रत्यास्मरण
(स) रामनारायण को निराहार खड़े रहने की आज्ञा	उदाहरण

३. सुनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना

१. ध्यान एवं मनोयोग पूर्वक श्रवण

२. ग्रहण शीलता

३. स्थिति

४. पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना रूढ़िवादिता पर व्यंग्य को समझना	आरोहावरोह तथा भावों का ध्यान रखते हुए वाचन

पूर्वज्ञान—छात्र कक्षा ७ में श्री भगवती चरण वर्मा की 'प्रायश्चित' शीर्षक कहानी पढ़ चुके हैं।

उत्प्रेरणात्मक उपक्रम :

अध्यापक कथन—आपने कक्षा ७ में 'प्रायश्चित' कहानी पढ़ी है। तो बताइए कि—

१. पण्डितजी कबरी बिल्ली के मरने पर क्या प्रायश्चित करवाना चाहते थे ?
२. वह कार्य कहाँ तक उचित था।
३. इस प्रकार का प्रायश्चित करना माँ जी ने क्यों स्वीकार किया।
४. मानव की इस प्रकार की भावनाओं से किस प्रकार की हानियाँ हो सकती हैं ?

आज हम श्री उदयशङ्कर भट्ट द्वारा रचित 'गिरती दीवारें' एकांकी के उस अंश का अध्ययन करेंगे जिसमें इसी प्रकार के एक रूढ़िवादी राव साहब की भावनाओं पर लेखक ने व्यंग्य किया है।

प्रस्तुतीकरण—'लड़की .... यथार्थ है।'

उद्देश्य एवं कार्य	अध्यापक का कार्य	छात्रों का कार्य
१. सुनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना (आदर्श वाचन)	पठितांश का आरोह अवरोह पूर्वक पात्रानुकूल तथा भावानुकूल वाचन	धैर्य एवं मनोयोग पूर्वक श्रवण
२. पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना (अनुकरण वाचन)	यथास्थान वाचन निर्देश तथा त्रुटि संशोधन	आरोह-अवरोह पूर्वक पात्रानुकूल तथा भावानुकूल वाचन
३. वाचनानुबोध	अध्यापक द्वारा निम्नांकित बोध प्रश्न पूछे जायेंगे। १. रावसाहब रामनारायण पर क्रुद्ध क्यों हुए थे	छात्र उपेक्षित उत्तर देंगे बच्ची के कमरे में आ जाने के कारण

उद्देश्य एवं कार्य	अध्यापक का कार्य	छात्रों का स्वकार्य
	२. विजय मोहन ने वंश की प्रतिष्ठा नष्ट होने का क्या कारण बतलाया ?	चोगा फट जाने तथा पैदल चलने के कारण परिवार की परम्परा का टूटना
४. भाषा के तत्वों का ज्ञान प्राप्त करना (आत्मीकरण)	प्रत्यय का ज्ञान पूर्वज पूर्व + अ (पहले जन्म लेने वाला) इसी प्रकार अनुज जलज उपसर्ग — अनर्थ अन् + अर्थ (न करने योग्य कार्य) इसी प्रकार अनाचार, अनुपयोगी आदि सन्धि— निराहार—निः + आहार विसर्ग- (भूला)	छात्र अपनी अभ्यास पुस्तकों में लिखेंगे ।
	परम्परा—पूर्व प्रचलित कार्य वाक्य प्रयोग	हमारे विद्यालय में समय पर कार्य करने की परंपरा है ।
	प्रपितामह	पिता/पितामह/प्रपितामह
	मुहावरा— स्वप्न भंग करना	सुखद कल्पना को नष्ट कर देना । (पुत्र के अनुत्तीर्ण होने से पिता का स्वप्न भंग हो गया)

५. विषय वस्तु का ज्ञान एवं भाव-ग्रहण :

अध्यापक निम्न प्रश्न पूछेगा ।	छात्र समझकर अपेक्षित उत्तर देंगे ।
१. लड़की रामनारायण को बुलाने क्यों आई !	बच्चे के गिरने के कारण
२. रामनारायण ने लड़की को क्या कहा ?	चले जाने को
३. इस बातचीत का रावसाहब पर क्या प्रभाव पड़ा ।	वे काँपने लगे ।
४. राव साहब के काँपने का क्या कारण था ।	वंश की मर्यादा भंग हो रही थी
५. राव साहब के वंश की क्या परम्परा थी ?	कमरे में कोई जोर से नहीं बोल सकता था ।
६. यह परम्परा कहाँ तक उपयुक्त थी ?	यह परम्परा उपयुक्त नहीं थी ।
७. मुंशीजी ने अनर्थ किसे माना ?	लड़की के आने को
८. 'मुझे रात से ही भयंकर स्वप्न आ रहे हैं ?' इस कथन से मुंशीजी की कौनसी भावना व्यक्त होती है ?	रूढ़िवादिता की भावना
९. 'ओह ! वह देखो ! पूर्वजों के चोगे हिल रहे है ?' क्या राव साहब का यह कथन सत्य है ?	नहीं यह सत्य नहीं, भय के कारण राव साहब ऐसा अनुभव कर रहे थे ।
१०. राव साहब को ऐसा आभास क्यों हुआ ?	परम्परा से लिपटे रहने के कारण
११. इससे राव साहब के चरित्र की कौनसी विशेषता प्रकट होती है ?	वे रूढ़िवादी थे
१२. दूसरी बार कटोरा क्यों बज उठा ?	राव साहब के ही भय वश बजा दिया था ।
१३. रावसाहब का स्वप्न किस प्रकार भंग हो गया ।	कुल की मर्यादा की रक्षा न हो सकी ।

अध्यापक निम्न प्रश्न पूछेगा	छात्र समझकर अपेक्षित उत्तर देंगे
१४. विजय मोहन ने किस स्थिति में कमरे में प्रवेश किया ।	चोगा फटा हुआ
१५. विजय मोहन ने इस स्थिति को वहाँ की प्रतिष्ठा नष्ट होने का कारण क्यों बताया	रूढ़िवादिता के कारण
१६. मर्यादा तोड़ने पर राव साहब के दादाजी ने अपने सम्बन्धी को क्या सजा दी थी ?	सात दिन तक निराहार खड़ा रखा था ।
१७. यह सजा कहाँ तक न्यायोचित थी ?	यह सजा अनुपयुक्त थी ।
१८. रावसाहब रामनारायण को क्या सजा देना चाहते थे ?	चित्रों के सामने निराहार खड़ा रहे
१९. यह व्यवहार कहाँ तक न्याय संगत था ?	यह राव साहब की रूढ़िवादिता का प्रमाण था और न्याय संगत नहीं था ?

आवृत्ति	अध्यापक निम्न प्रश्न पूछेगा	छात्र सम्पूर्ण विषय-वस्तु के आधार पर उत्तर देंगे
(विचार संश्लेषण तथा पाठान्तर्गत मूल्यांकन)	१. राव साहब ने सामान्य घटनाओं पर भी इतना आश्चर्य प्रकट क्यों किया ?	अपने रूढ़िवादी विचारों के कारण
	२. विजय मोहन की रूढ़िवादिता किस कथन से प्रकट होती है ?	चोगा फटने तथा गाड़ी टकराने की घटना ।
	३. रामनारायण को दी जाने वाली सजा कहाँ तक उपयुक्त थी ?	

मूल्यांकन :

१. पूर्वज शब्द के समान 'ज' प्रत्यय लगाकर चार शब्द बताइये ।

२. *'स्वप्न भंग होना'* मुहावरे का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये ।

३. राव साहब की रूढ़िवादिता किन-किन बातों से प्रकट होती है ?

गृहकार्य :

पठितांश को ठीक तरह पढ़ने का अभ्यास कीजिये ।

अन्तिम दिन पात्रानुकूल वाचन के उद्देश्य से साभिनय पाठ किया जायगा । ●●

कहानी पाठ योजना

विषय—हिन्दी (कहानी)

शीर्षक—'मौत की प्यास'

कक्षा—९

सम्भावित पाठ रूप—मौखिक

उद्देश्य :

१. **सुनकर वस्तु-ग्रहण करने की योग्यता का विकास :**
छात्र 'मौत की प्यास' कहानी को सुनकर उसमें निहित तथ्यों को ग्रहण कर सकेंगे।

२. **सुनकर भाव-ग्रहण करने की योग्यता का विकास :**
छात्र वीरत्व एवं आत्मोसर्ग के भावों का बोध करेंगे।

३. **बोलकर अभिव्यक्त करने की योग्यता का विकास :**
अध्यापक द्वारा कही गई कहानी को सुनकर उसमें निहित तथ्यों तथा भावों को छात्र अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सकेंगे।

४. **सद्वृत्तियों का विकास :— राष्ट्र-प्रेम**

उत्प्रेरणात्मक उपक्रम :

निम्न पंक्ति के आधार पर प्रश्न पूछे जायेंगे।
'चूँड़ावत माँगी सेनानी, सिर काट दियो क्षत्राणी'

१. क्षत्राणी ने चूँडावत को निशानी के रूप में कौन-सी वस्तु दी थी ?
(अपेक्षित उत्तर—'सिर')

२. क्षत्राणी के सिर को देखकर चूँड़ावत के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ा होगा ? (अपेक्षित उत्तर—सोया हुआ वीरत्व जाग उठा)

३. मेवाड़ के वीरों ने मेवाड़ का नाम किस प्रकार ऊँचा किया ?
(अपेक्षित उत्तर—आत्म बलिदान द्वारा)

पाठ्याभिसूचन :

मेवाड़ अपने आत्मोत्सर्ग के लिए सदैव ही प्रसिद्ध रहा है। यहाँ के वीरों एवं वीरांगनाओं ने अपने देश की सम्मान-रक्षा के लिए

मृत्यु को फूल के समान वरण किया है। इसी प्रकार के भावों से ओत-प्रोत श्री रामनाथ सुमन जी द्वारा लिखित 'मौत की प्यास' नामक कहानी हम सुनेंगे एवं सुनायेंगे।

प्रस्तुतीकरण :

अध्यापक छात्रों के समक्ष 'मौत की प्यास' नामक कहानी को अपने शब्दों में प्रस्तुत करेगा तथा आवश्यकतानुसार कहानी को नया मोड़ देने हेतु वह छात्रों से प्रश्न भी करता चलेगा। छात्र अध्यापक द्वारा प्रस्तुत कहानी को एकाग्रचित होकर सुनेंगे।

उद्देश्य : सुनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास

अध्यापक कथन :

बच्चों! आज से कई सौ वर्ष पूर्व भारत पर जहाँगीर का शासन था और मेवाड़ की गद्दी पर अमर सिंह शासन करते थे। मेवाड़ की रक्षा के लिए वीरों ने कभी भी अपने कदम पीछे नहीं हटाये थे और उन्होंने आत्म बलिदान द्वारा सदैव एक अनोखा आदर्श प्रस्तुत किया था। ऐसा ही एक अद्भुत बलिदान का दृश्य उस समय उपस्थित हुआ जबकि मेवाड़ पर जहाँगीर ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था। किन्तु वीर मेवाड़ी अपनी हार मानने के लिए किसी भी कीमत पर तैयार न थे। ऐसी संकट पूर्ण स्थिति में सभी दलों के राजपूत एकत्रित हुए और मुगलों को मेवाड़ भूमि से हटाने का संकल्प करने लगे। किन्तु प्रश्न यह था कि सेना का नेतृत्व कौन करे?

प्रश्न : सेना नायक में कौन कौन से गुण होने चाहिये?
(छात्रों द्वारा अपेक्षित उत्तर—शौर्य, पराक्रम, उत्साह, निर्भयता आदि)

कहानी कथन :

शक्तावत और चूंडावत नामक सरदार इन सभी गुणों से युक्त थे। वे मृत्यु से न घबराने वाले वीर थे। चूंडावतों का कहना था कि हम सेना के आगे रहेंगे और शक्तावत कहते थे हम रहेंगे।

प्रश्न : ऐसी विकट स्थिति में जब दो वीर स्वतः प्रेरित इच्छा से अपने को उत्सर्ग करने के लिए आगे बढ़ रहे हों तो नेतृत्व की समस्या का हल कैसे किया जायगा? (छात्रों द्वारा अपेक्षित उत्तर—शौर्य-परीक्षण द्वारा)

कहानी कथन :

राणा ने दोनों सरदारों की भावनाओं का सम्मान करते हुए कहा भाई ! इसमें झगड़ने की क्या बात है ? जो शत्रु के किले में पहले प्रवेश करेगा वही नेतृत्व करेगा। दोनों ही सरदार राणा की इस बात पर सहमत हो गये।

शक्तावत और चूंडावत दोनों ने ही दुर्ग में प्रवेश करने का संकल्प किया। मेवाड़ का यह दुर्ग अपनी अजेयता के लिए इतिहास में प्रसिद्ध था। इस दुर्ग के चारों ओर एक गहरी नदी बहती थी। दुर्ग की दीवारें अत्यन्त ऊँची और वीरों को चुनौती देने वाली थीं। दुर्ग में प्रवेश करने का केवल एक ही रास्ता था, और वह था सिंह द्वार। वह द्वार भीषण काँटों से युक्त लोहे के कपाट से बना था।

प्रश्न : सेना से रक्षित ऐसे विकट लोहे के कपाट से बने द्वार जैसे दुर्ग में किस प्रकार से प्रवेश किया जा सकता था ? (छात्रों द्वारा अपेक्षित उत्तर — चौकीदार को धन का लालच देकर, चौकीदार को मारकर तथा सेना सहित प्रवेश द्वार पर आक्रमण कर)

कहानी कथन :

इस लोहे युक्त दुर्ग पर अधिकार पाने के लिए शक्तावत और चूंडावत दोनों ही प्रयत्न शील थे। शक्तावत सिंह द्वार पर हुँच युद्ध करने लगे। चूंडावत इसके विपरीत नदी पार कर सीढ़ी द्वारा दीवार पर चढ़कर दुर्ग पर अधिकार करने का प्रयास कर रहे थे।

यह देख शक्तावत ने चिन्तित हो हाथी को द्वार पर धक्का देने हेतु प्रेरित किया किन्तु हाथी चीखकर वापस लौट आया।

प्रश्न : हाथी चीखकर वापस क्यों लौटा था ?
(छात्रों द्वारा अपेक्षित उत्तर – तीक्षण काँटों के चुभने से)

कहानी कथन :

इधर चूंडावत अपने प्रयास में कदम पर कदम आगे बढ़ रहे थे। कहीं चूंडावत विजय श्री न प्राप्त करलें और मैं पीछे न रह जाऊँ यह सोच शक्तावत ने अपना सीना कपाटों के तीक्ष्ण शूलों की परवाह न करते हुए लगा दिया और महावत को आज्ञा दी कि अब हाथी को बढ़ाओ।

प्रश्न : १. हाथी ने जब फाटक को तोड़ा होगा उस समय शक्तावत की क्या स्थिति हुई होगी ? (छात्रों द्वारा अपेक्षित उत्तर—शक्तावत को वीरगति मिली)

२. शक्तावत के इस बलिदान से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ? (छात्रों द्वारा अपेक्षित उत्तर—स्वाभिमान रक्षा हेतु आत्म बलिदान से पीछे न हटना)

कहानी कथन :

शक्तावत के इस बलिदान के फलस्वरूप दरवाजा टूट गया। चूंडावत जो दीवार पर चढ़ कर दुर्ग विजय करना चाहता था गोली से आहत हो धरती पर आ गिरा। अपनी हार होते देखकर चूंडावत सेना के सरदार रावत जैतसिंह ने जो जमीन पर खड़े हुए थे, सैनिकों को आज्ञा दी कि मेरा सिर काटकर दुर्ग के भीतर फेंक दो। आज्ञा का तुरन्त पालन किया गया और चूंडावतों को सेना में अग्र स्थान मिला।

प्रश्न : प्रस्तुत कहानी को सुनने के बाद अब तुम किसको विजयी मानोगे ?

बोलकर अभिव्यक्त करने का विकास :

अध्यापक छात्रों को कहानी कहने के लिए कहेगा और छात्र स्वयं अपनी भाषा में कहानी कहेंगे। कहानी को नया मोड़ देने हेतु यथावश्यक स्थान पर अध्यापक प्रश्न पूछ कर तर्कपूर्ण और कल्पना युक्त स्थिति भी उत्पन्न करता चलेगा।

(१) यदि चूंडावत और शक्तावत के बीच नेतृत्व को लेकर झगड़ा न होता तो फिर कहानी का क्या रूप होता ?

(२) यदि शक्तावत सिंह द्वार विजय हेतु स्वयं को समर्पित न करता तो क्या होता ?

(३) रावत जैत सिंह यदि अपना सिर काट कर दुर्ग के भीतर फेंकने की आज्ञा न देता तो आगे क्या होता ?

(४) कहानी के अनुसार 'पराजय में भी विजय निहित है' इससे क्या तात्पर्य है ?

आवृत्ति के प्रश्न (१) चूंडावत और शक्तावत में झगड़ा किस बात का था ?

(२) चूंडावतों ने सिंह द्वार पर विजय किस प्रकार प्राप्त की ?

(३) शक्तावत के आत्मबलिदान से तुम्हें क्या प्रेरणा मिलती है ?

गृहकार्य : इस कहानी को घर से पढ़कर आने का निर्देश दिया जायगा ताकि अगले दिन गहन अध्ययन की दृष्टि से इस पाठ को पढ़ाया जा सके।

व्याकरण पाठ योजना (१)

विषय – हिन्दी व्याकरण

प्रकरण—'इक' प्रत्यय का प्रयोग

कक्षा—८

विशिष्ट उद्देश्य :

(१) छात्रों को हिन्दी भाषा में प्रयुक्त किए जाने वाले प्रत्यय युक्त विकारी शब्दों से परिचित कराना।

(२) विभिन्न उदाहरणों द्वारा मूल शब्द एवं उसमें 'इक' प्रत्यय लगाकर शब्द रचना का ज्ञान कराना। साथ ही बालकों को 'इक' प्रत्यय युक्त शब्दों के प्रयोग की क्षमता प्रदान करना।

पूर्व ज्ञान :

छात्र कतिपय प्रत्यय युक्त शब्दों से परिचित हैं तथा उनका प्रयोग करते भी हैं, परन्तु 'इक' प्रत्ययों के योग से शब्द रचना करने का उन्हें ज्ञान नहीं है।

प्रस्तावना :

शिक्षिका लपेट पट पर कुछ वाक्य लिख कर ले जायेगी। उन वाक्यों को बालकों के सम्मुख पढ़ा जायेगा, तत्पश्चात् बालकों से प्रश्न पूछे जायेंगे।

उदाहरण :

(१) हमारे समाज में अनेक कुरीतियाँ हैं।

(२) सामाजिक उन्नति के लिए इन कुरीतियों को दूर करना चाहिए।

(३) अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रचार किया था।

(४) अशोक के धार्मिक प्रचार कार्य सराहनीय है।

(५) प्रत्येक देश का अपना विशिष्ट साहित्य होता है।

(६) प्रत्येक देश की साहित्यिक विचार धाराएँ भिन्न होती हैं।

(शिक्षिका एक एक वाक्य को पढ़ेगी और छात्रों से प्रश्नों के द्वारा, मूल शब्द और प्रत्यय युक्त शब्दों का अन्तर समझाएगी !)

प्रश्न :

(१) (क) सामाजिक शब्द का मूल शब्द क्या है ? (समाज)

(ख) समाज में किस शब्दांश के योग से सामाजिक शब्द बन गया है ? (इक लगाने से)

(ग) 'इक' लगाने से समाज के पहले अक्षर 'स' में आप क्या परिवर्तन देख रहे हैं ? ('स' का 'सा' हो जाता है)

(२) (क) धार्मिक शब्द का मूल शब्द क्या है ? (धर्म)

(ख) धर्म के मूल रूप में कैसे परिवर्तन हुआ ? ('इक' लगाने से)

(ग) 'इक' लगाने से 'धर्म' के पहले अक्षर 'ध' में क्या परिवर्तन हो गया है ?

('ध' का 'धा' अर्थात् 'अ' का 'आ' हो गया है)

(३) (क) साहित्यिक शब्द का मूल रूप क्या है ? (साहित्य)

(ख) साहित्य में किस शब्दांश के योग से साहित्यिक शब्द बन गया है ? (इक के योग से)

नियम निर्धारण :

ऐसे शब्दांशों या ध्वनि समूहों को, जो मूल शब्द के अन्त में लगने से अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, प्रत्यय कहते हैं। आज हम लोग 'इक' प्रत्यय का प्रयोग पढ़ेंगे !

प्रस्तुतीकरण :

अभी हम लोगों ने 'इक' प्रत्यय से बने हुए कुछ शब्दों के उदाहरण देखे हैं। अब हम लोग देखेंगे कि 'इक' का प्रयोग विभिन्न प्रकार के शब्दों के साथ किस प्रकार होता है।

प्रथम अन्विति

('अ' और 'आ' से प्रारम्भ होने वाले शब्दों में 'इक' का योग)

उदाहरण :

(१) (क) समय परिवर्तनशील है

(ख) हमारे देश में अनेक सामयिक समस्याएँ हैं।

(२) (क) हर मुसीबत का सामना साहस एवं धैर्यपूर्वक करना चाहिए।

(ख) बालकों को साहसिक कहानियाँ बहुत अच्छी लगती हैं।

(३) (क) बालकों में अच्छे व्यवहार की आदत डालनी चाहिए।

(ख) व्यावहारिक मनुष्य ही कुशलतापूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है।

तुलना एवं व्याख्या :

(१) (क) सामयिक शब्द का मूल शब्द क्या है? (समय)

(ख) समय शब्द में किस शब्दांश के योग से सामयिक शब्द बन गया है? (इक प्रत्यय के योग से)

(ग) 'समय' शब्द में 'इक' प्रत्यय लगाने से 'स' का आप क्या रूप देख रहे हैं? ('स' का 'सा' हो जाता है)

(घ) 'स' का 'अ' स्वर किस स्वर में बदल गया है? (आ में)

(२) (क) साहसिक शब्द का मूल रूप क्या है? (साहस)

(ख) साहस शब्द में किस 'शब्दांश' के योग से साहसिक शब्द बन गया है? ('इक' प्रत्यय के योग से)

(ग) 'इक' लगाने से 'साहस' शब्द के पहले अक्षर 'सा' का आप क्या रूप देख रहे हैं? (सा)

(घ) 'सा' में 'आ' स्वर किस स्वर में परिवर्तित हो गया है? (आ ही रह गया है।)

(३) (क) व्यावहारिक शब्द का मूल रूप क्या है? (व्यवहार)

(ख) व्यवहार शब्द में किस शब्दांश के योग से व्यावहारिक शब्द बन गया है? ('इक' प्रत्यय के योग से)

(ग) 'इक' प्रत्यय लगाने से व्यवहार शब्द के पहले अक्षर 'व्य' में क्या परिवर्तन हो गया है? ('व्य' का 'व्या' हो जाता है)

(घ) 'व्य' का 'अ' स्वर किस स्वर में परिवर्तित हो गया है? (आ में)

नियम-निर्धारण :

'इक' प्रत्यय लगाने पर मूल शब्द का प्रथम स्वर यदि अ है तो वह 'आ' हो जाता है।

अभ्यास :

(अ) अर्थ + इक = आर्थिक

(आ) मास + इक = मासिक

(संयुक्ताक्षर) व्यवसाय + इक = व्यावसायिक ।

द्वितीय अन्विति

(इ, ई और 'ए' से प्रारम्भ होने वाले शब्दों में इक का योग)

उदाहरण :

लपेट पट पर

१. (क) हमें प्रति दिन दिन ईश्वर का स्मरण करना चाहिये ।

(ख) हमें अपना दैनिक जीवन नियमित बनाना चाहिये ।

२. (क) प्रत्येक मनुष्य अपनी नीति के अनुसार कार्य करता है ।

(ख) वर्तमान समय में नैतिक शिक्षा की बहुत आवश्यकता है ।

३. (क) हमारे यहाँ चार वेद हैं ।

(ख) वैदिक काल में स्त्रियाँ भी शिक्षित होती थीं ।

तुलना एवं व्याख्या :

१. (क) दैनिक शब्द का मूल रूप क्या है ? (दिन)

(ख) 'दिन' शब्द में किस शब्दांश के योग से दैनिक शब्द बन जाता है। ('इक' प्रत्यय के योग से)

(ग) दिन में 'इक' प्रत्यय लगाने से 'दि' का आप क्या रूप देखते हैं ? (दै)

(घ) 'दि' में 'इ' स्वर किस स्वर में बदल गया है ? ('इ' से ए स्वर में)

२. (क) नैतिक शब्द किस मूल शब्द से बना है । (नीति शब्द से)

(ख) नीति शब्द में किस शब्दांश के योग से नैतिक शब्द बन गया है । ('इक' प्रत्यय के योग से)

(ग) नीति शब्द में 'इक' प्रत्यय लगाने से आप 'नी' का क्या रूप देख रहे हैं ? (नै रूप)

(घ) 'ई' स्वर किस स्वर में बदल गया है ? (ऐ)

३. (क) वैदिक शब्द का मूल शब्द क्या है ? (वेद)

(ख) वेद में 'इक' प्रत्यय लगाने से 'वे' का आप क्या रूप देखते हैं ? (वै)

(ग) 'ए' स्वर किस स्वर में बदल गया है ? (ऐ स्वर में)

नियम निर्धारण :

'इ', 'ई', 'ए' से प्रारम्भ होने वाले शब्दों में 'इक' प्रत्यय लगाने से इन शब्दों का 'ऐ' हो जाता है।

अभ्यास :

(इ) (१) विज्ञान + इक = वैज्ञानिक

(ई) (२) जीव + इक = जैविक

(ए) (३) देह + इक = दैहिक

तृतीय अन्विति

(उ, ऊ, ओ से प्रारम्भ होने वाले शब्दों में 'इक' का योग)

उदाहरण :

(लपेट पट पर)

१. (क) भारत में **उद्योग** धन्धों को बढ़ावा देना चाहिये।

(ख) **औद्योगिक** उन्नति से ही गरीबी दूर की जा सकती है।

२. (क) **भूगोल** को मान-चित्र की सहायता से पढ़ाना चाहिये।

(ख) प्रत्येक देश की **भौगोलिक** परिस्थितियाँ भिन्न होती हैं।

३. (क) गाँधी जी ने **लोक** सेवा का भार अपने कन्धे पर लिया था।

(ख) उन्होंने लौकिक सुख-सुविधाओं को त्याग दिया था।

तुलना एवं व्याख्या :

१. (क) औद्योगिक शब्द का मूल रूप क्या है ? (उद्योग)

(ख) उद्योग शब्द में किस शब्दांश के योग से 'औद्योगिक' शब्द बन गया है ? (इक प्रत्यय के योग से)

(ग) उद्योग में 'इक' प्रत्यय लगाने से 'उ' का आप क्या रूप देखते हैं ? (औ)

(घ) 'उ' स्वर किस स्वर में परिवर्तित हो गया है ? (औ में)

२. (क) भौगोलिक शब्द का मूल रूप क्या ? (भूगोल)

(ख) भूगोल शब्द में 'इक' प्रत्यय लगाने से 'उ' का आप क्या रूप देखते हैं ? (भू से भौ)

(ग) 'उ' स्वर किस स्वर में परिवर्तित हो गया है ? (औ में)

२. (क) 'लौकिक' शब्द का मूल रूप क्या है ? (लोक)

(ख) लोक शब्द में 'इक' प्रत्यय लगाने से आप 'लो' का क्या रूप देख रहे हैं ? (लो से लौ रूप)

(ग) 'ओ' स्वर किस स्वर में बदल गया है ? (औ में)

नियम निर्धारण :

उ, ऊ, ओ से प्रारम्भ होने वाले शब्दों में 'इक' प्रत्यय लगने से उनका 'औ' हो जाता है।

अभ्यास :

(लपेट पट पर)

(उ) पुराण + इक = (पौराणिक)

(ऊ) मूल + इक = (मौलिक)

(ओ) योग + इक = (यौगिक)

मूल्यांकन :

१. निम्नलिखित शब्दों में 'इक' प्रत्यय लगाइए :

(१) संसार ( ) (२) मानस ( )

(३) शिक्षा ( ) (४) सेना ( )

(५) स्वभाव ( )

२. निम्नलिखित शब्दों के मूल रूप लिखिए :

(१) पारिवारिक ( ) (२) बौद्धिक ( )

(३) दैविक ( )

श्याम पट कार्य :

'इक' प्रत्यय

('अ' और 'आ' = आ)	(इ, ई, ए = ऐ)	(उ, ऊ, ऐ = औ)
१. अर्थ + इक = आर्थिक	विज्ञान + इक = वैज्ञानिक	पुराण + इक = पौराणिक
२. मास + इक = मासिक	जीव + इक = जैविक	मूल + इक = मौलिक
३. व्यवहार + इक = व्यावहारिक	देह + इक = दैहिक	योग + इक = यौगिक लोक + इक = लौकिक

गृह कार्य :

प्रश्न :

आर्थिक, वैज्ञानिक, पौराणिक, मासिक, यौगिक शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

१. निम्नलिखित शब्दों में 'इक' प्रत्यय लगाइये :

परस्पर, शरीर, अध्यात्म, उपचार।

व्याकरण पाठ योजना (२)

विषय—हिन्दी व्याकरण

प्रकरण—क्रिया विशेषण (परिभाषा तथा पहचान)

कक्षा—७

उद्देश्य : (१) छात्रों में लक्षणों के आधार पर क्रिया विशेषण को पहचानने की योग्यता पैदा करना।

(२) छात्रों में क्रिया विशेषण के प्रयोग की योग्यता उत्पन्न करना।

पूर्व ज्ञान—छात्र विशेषण और क्रिया शब्दों से परिचित हैं।

प्रस्तावना—छात्रों के सम्मुख श्याम पट पर निम्नलिखित वाक्यों को प्रस्तुत किया जायगा।

(१) मेरा घोड़ा काला है।
(२) वह ४ फीट ऊँचा है।
(३) यह घोड़ा तेज दौड़ता है।

इन उदाहरणों पर निम्नलिखित प्रश्न किये जायेंगे।

(१) पहले वाक्य में 'काला' शब्द किस की विशेषता बताता है।
(२) 'घोड़ा' शब्द व्याकरण से क्या है ?
(३) दूसरे वाक्य में 'ऊँचा' शब्द किसकी विशेषता बताता है ?
(४) 'वह' शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है ?
(५) तीसरे वाक्य में 'दौड़ता है' शब्द व्याकरण से क्या है ?
(६) वाक्य के अनुसार घोड़ा कैसा दौड़ता है ?
(७) 'तेज' शब्द किस शब्द की विशेषता बताता है ?

उद्देश्य कथन—इस वाक्य में तेज शब्द क्रिया शब्द 'दौड़ता है' की विशेषता बताता है, आज हम लोग ऐसे ही शब्दों के बारे में अध्ययन करेंगे जो क्रिया अथवा विशेषण की विशेषता बताते हैं।

प्रस्तुतीकरण—छात्रों के सम्मुख निम्नलिखित वाक्यों को प्रस्तुत किया जायगा और उनके ऊपर विश्लेषणात्मक प्रश्न किये जायेंगे ।

प्रथम अन्विति—(क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द)

(१) वह धीरे-धीरे चलता है ।
(२) राजा ने मन्त्री को जोर से बुलाया ।
(३) वह उठ कर भागा ।
(४) मैंने साफ साफ उससे कह दिया था ।

व्याख्यात्मक प्रश्न—शिक्षक एक-एक वाक्य को लेकर निम्नलिखित प्रश्न करेगा–

१) 'चलता है' शब्द व्याकरण से क्या है ?
(२) इसकी विशेषता बताने वाला कौन शब्द है ?
(३) 'बुलाना' शब्द व्याकरण से क्या है ?
(४) इसकी विशेषता बताने वाला कौन शब्द है ।
(५) 'भागा' शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है ?
(६) इसको विशेषता बताने वाला कौन शब्द है ?
(७) 'कह दिया था' शब्द व्याकरण से क्या है ?
(८) इसकी विशेषता बताने वाला कौन सा शब्द है ?
(९) ऊपर के वाक्यों में चलना, बुलाना, भागना तथा कहना शब्द व्याकरण से क्या हैं ? (क्रिया)
(१०) धीरे-धीरे, जोर से, उठकर, साफ-साफ शब्द इन क्रियाओं के बारे में क्या बताते हैं ? (विशेषताएँ)
(११) क्रिया शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को व्याकरण में क्या कहते हैं ? (समस्या)

सिद्धान्त निरूपण—किसी वाक्य में जो शब्द क्रिया शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—(१) नीचे दिये गये वाक्यों में क्रिया विशेषण शब्दों के नीचे निशान लगाइये ।

(२) यह बताइये कि ये शब्द किस क्रिया की विशेषता बताते हैं ।

(क) शीला धीरे-धीरे चलती है ।
(ख) कमला तेज चलती है ।

(ग) वह अन्त में न जा सका।
(घ) यह लेखनी अच्छी चलती है।

द्वितीय अन्विति—(विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द)

(१) नरेश अधिक सुन्दर है।
(२) यह काम बहुत कठिन है।
(३) मेरे पास केवल दो कलमें हैं।

व्याख्यात्मक प्रश्न—शिक्षक प्रत्येक वाक्य पर व्याख्यात्मक प्रश्न करेगा—

(१) पहले वाक्य में 'अधिक' शब्द किसकी विशेषता बताता है ?
(२) 'सुन्दर' शब्द व्याकरण से क्या है ?
(३) दूसरे वाक्य में 'बहुत' शब्द किसकी विशेषता बताता है ?
(४) 'कठिन' शब्द व्याकरण से क्या है ?
(५) तीसरे वाक्य में 'केवल' शब्द किसकी विशेषता बताता है ?
(६) 'दो' शब्द व्याकरण से क्या है ?
(७) इन वाक्यों में 'सुन्दर,' 'कठिन,' 'दो,' शब्द व्याकरण से क्या हैं ?
(८) इन शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द 'अधिक', 'बहुत', 'केवल', व्याकरण से क्या हैं ?
(९) जो विशेषण शब्द विशेषण की परिभाषा बताते हैं उन्हें व्याकरण में क्या कहते हैं ?

सिद्धान्त निरूपण—वाक्य में जो विशेषण शब्द अन्य विशेषण शब्द की विशेषता बताते हैं उन्हें भी क्रिया विशेषण कहते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न—(१) नीचे दिये गये वाक्यों में से क्रिया विशेषण शब्दों को छाँटिये :
(२) इन शब्दों को क्रिया विशेषण क्यों कहना चाहिये।
(क) यह लेखनी बहुत अच्छी चलती है।
(ख इससे लिखने में कितना मजा आता है।
(ग) इस कलम से सुलेख शीघ्र लिखा जा सकता है।
(घ) स्याही का रंग गहरा लाल है ?
(ङ) कलम में बहुत थोड़ी स्याही है।

विशेष—इसी प्रकार कुछ उदाहरणों की सहायता से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जायगा कि कुछ क्रिया विशेषण शब्द भी अन्य क्रिया विशेषण

शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें भी क्रिया विशेषण कहते हैं। किन्तु हिन्दी में इनकी संख्या बहुत थोड़ी है।

सामान्यीकरण—ऊपर की व्याख्या के आधार पर क्या निष्कर्ष निकला?

नियमीकरण—जो शब्द क्रिया, विशेषण, अथवा क्रियाविशेषण शब्दों की विशेषता बताते हैं उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।

मूल्यांकन :

(क) नीचे दिये गये वाक्यों में क्रिया विशेषण की परिभाषा बताने वाले वाक्यों के सामने सही √ का निशान लगाइये।

क्रिया विशेषण उन्हें कहते हैं जो—

१. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं।
२. जो शब्द विशेषण शब्दों की विशेषता बताते हैं।
३. जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं।
४. जो शब्द, विशेषण, क्रिया तथा क्रिया विशेषण की विशेषता बताते हैं।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया विशेषण शब्दों को भरिये :

१. दूध में कोई अधिक··············वस्तु पड़ी है।
२. लाल और पीले रंगों में लाल रंग·········अधिक चमकीला होता है।
३. अभ्यास से दौड़ने की गति·············बढ़ती है।
४. यह स्याही············चमकती है।

गृह कार्य—अपनी पाठ्य पुस्तक से क्रिया तथा विशेषण की विशेषता बताने वाले पाँच-पाँच शब्दों को छाँटिये और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये।

व्याकरण पाठ योजना (३)

विषय — हिन्दी व्याकरण

प्रकरण — युग्म पदों द्वारा बनने वाले क्रिया विशेषणों की पहिचान एवं प्रयोग

कक्षा — ६

उद्देश्य :

(१) लक्षण के आधार पर युग्म पद वाले क्रिया विशेषणों की पहिचान और प्रयोग में छात्रों को कुशल बनाना।

(२) निरन्तरता एवं शीघ्रता बोधक युग्म पदों वाले क्रिया विशेषणों की पहिचान तथा प्रयोग करने की छात्रों में योग्यता उत्पन्न करना।

पूर्वज्ञान :

छात्रों को क्रिया विशेषण की सामान्य जानकारी है, किन्तु वे युग्म पदों से बनने वाले क्रिया विशेषणों से परिचित नहीं हैं।

प्रस्तावना :

अध्यापक लपेट पट पर निम्नलिखित वाक्यों को प्रस्तुत करेगा और उन पर प्रश्न पूछेगा।

(१) घोड़ा तेज दौड़ता है।

(२) शिशु की हड्डियाँ अधिक कोमल होती हैं।

(३) कछुआ बहुत धीरे चलता है।

(४) मोहन अभी गया है।

(५) सोहन अभी-अभी गया है।

प्रश्न :

(१) पहले वाक्य में कौन शब्द क्रिया विशेषण है ?

(२) यह किस क्रिया की विशेषता बतलाता है ?

(३) 'अधिक' शब्द किस शब्द की विशेषता बतला रहा है ?

(४) 'कोमल' शब्द व्याकरण से क्या है ?

(५) तीसरे वाक्य में 'धीरे' शब्द व्याकरण से क्या है ?

(६) इसकी विशेषता बताने वाला कौन सा शब्द है ?

(७) चौथे वाक्य में 'अभी' शब्द व्याकरण से क्या है ?

(८) यह किस क्रिया की विशेषता बतलाता है ?

(९) चौथे और पाँचवे वाक्यों के क्रिया विशेषण शब्दों में क्या अंतर है ?

उद्देश्य कथन :

चौथे वाक्य में क्रिया-विशेषण शब्द अकेला आया है जब कि पांचवें वाक्य में यह शब्द दो बार आया है। आज हम ऐसे ही युग्म पदों वाले क्रिया विशेषण शब्दों के बारे में अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण :

(प्रस्तुत पाठ दो अन्वितियों में पढ़ाया जायगा।)

प्रथमान्विति (निरन्तरता बोधक)

छात्रों के सम्मुख निम्नलिखित वाक्य प्रस्तुत किये जायेंगे। इनका विश्लेषण प्रश्नों के सहारे किया जायगा।

(१) मैं चलते-चलते थक गया।

(२) वह सोचते-सोचते उछल पड़ा।

(३) लड़की रोते-रोते सो गई।

(४) हँसते-हँसते उसका पेट फूल गया।

विश्लेषणात्मक प्रश्न :

(१) प्रथम वाक्य में क्रिया पद क्या है ?

(२) इसकी विशेषता बताने वाला क्रिया-विशेषण पद कौन सा है ?

(३) यह क्रिया-विशेषण किस बात का बोध कराता है ?

(४) दूसरे वाक्य में क्रिया क्या है ?

(५) इसकी विशेषता कौन-सा युग्म-पद बताता है ?

(६) 'सोचते-सोचते' शब्द द्वारा किस भाव का बोध होता है ?

(७) तीसरे वाक्य में क्रिया-पद क्या है ?

(८) इसकी विशेषता बताने वाला युग्म-पद कौन सा है ?

(९) 'रोते-रोते शब्द क्रिया की किस विशेषता को बताता है ?

(१०) अन्तिम वाक्य में क्रिया कौन शब्द है ?

(११) इस वाक्य में क्रिया विशेषण क्या है ?

(१२) यह शब्द क्रिया के किस भाव को व्यक्त करता है।

(१३) एक क्रिया शब्द जब दो बार आकर किसी अन्य क्रिया की विशेषता बताता है तो उस पद को क्या कहते हैं ?

(१४) जब क्रिया-विशेषण शब्द क्रिया की निरन्तरता प्रकट करता है तो उसे क्या कहते हैं

नियमीकरण :

जो क्रिया शब्द दो बार आकर किसी क्रिया की विशेषता बताते हों उन्हें युग्म-पद क्रिया-विशेषण कहते हैं, तथा यदि उनसे क्रिया की निरन्तरता प्रकट होती है तो उन्हें निरन्तरता बोधक युग्म-पद क्रिया-विशेषण कहते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

नीचे दिये गये वाक्यों में उन युग्म-पदों के नीचे निशान लगाइये, जिनसे क्रिया की निरन्तरता का बोध होता हो—

(१) सभी बच्चे आगे-आगे चल रहे थे कि मैं सोचते-सोचते उछल पड़ा।

(२) हम हँसते-हँसते पर्वत पर चढ़ जायेंगे, पीछे-पीछे तुम भी चले आना।

(३) अपने जन्म दिन पर वह दौड़-दौड़ कर मिठाइयाँ बाँट रहा था और हम लोग धीरे-धीरे खा रहे थे।

(४) सभी बच्चे बारी-बारी से आये और दौड़ते-दौड़ते कक्षा में चले गये।

द्वितीय अन्विति (शीघ्रता बोधक)

छात्रों के सम्मुख निम्नलिखित वाक्य प्रस्तुत किये जायेंगे और उनका विश्लेषण प्रश्न के सहारे किया जायगा—

वाक्य :

(१) वह देखते-देखते अदृश्य हो गया।

(२) मैं यह काम हाथों-हाथ करा लूँगा।

(३) जाते-जाते सुन लीजिए।

(४) मध्यावकाश में खोमचे वाले की चाट धड़ा-धड़ बिक जाती है।

विश्लेषणात्मक प्रश्न :

(१) प्रथम वाक्य में क्रिया पद क्या है ?

(२) इसकी विशेषता बताने वाला क्रिया-विशेषण शब्द कौनसा है ?

(३) यह क्रिया-विशेषण किस बात का बोध कराता है ? (शीघ्रता का)

(४) दूसरे वाक्य में कौन शब्द क्रिया है ?

(५) इसकी विशेषता कौनसा युग्म-पद बतलाता है ?

(६) 'हाथों-हाथ' द्वारा किस भाव का बोध होता है ? (शीघ्रता का)

(७) तीसरे वाक्य में क्रिया-पद क्या है ?

(८) इसकी विशेषता बतलाने वाला युग्म-पद कौनसा है ?

(९) इस वाक्य में जाते-जाते के प्रयोग से किस भाव का बोध होता है ?

(१०) अन्तिम वाक्य में कौन सा शब्द क्रिया के रूप में प्रयुक्त हुआ है ?

(११) बिकने की विशेषता बतलाने वाला कौनसा युग्म पद है ?

(१२) इस 'युग्म-पद' के प्रयोग से क्रिया की क्या विशेषता प्रकट होती है ? (शीघ्रता)

(१३) जब क्रिया-विशेषण कार्य होने की शीघ्रता प्रकट करता है तो उसे क्या कहते हैं ?

नियमीकरण—वे युग्म पद क्रिया विशेषण जो क्रिया की शीघ्रता का बोध कराते हैं उनको 'शीघ्रता बोधक' युग्म-पद क्रिया विशेषण कहते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न : निम्नलिखित वाक्यों में उन युग्म पदों को छाँटिये जिनसे क्रिया की शीघ्रता का बोध होता है—

(१) पहले तो उसका दिल धक् धक् कर रहा था किन्तु उसने देखते-देखते यह काम कर लिया।

(२) मैं ठीक-ठीक तो नहीं सुन पाया कि चलते चलते वह क्या कह गया था ?

(३) मैं बैठा-बैठा देखता रहा कि वह लड़का दौड़ते-दौड़ते थाने में रिपोर्ट कर आया।

(४) मेरा भाई पड़ा-पड़ा सोता रहा किन्तु मैंने उठते-उठते पाठ याद कर लिया।

मूल्यांकन :

१. निम्न वाक्यों में निरन्तरता का बोधक और शीघ्रता बोधक युग्म-पद क्रिया विशेषणों पर निशान लगाइये—

(१) मोहन एक सुन्दर लड़का है।

(२) वह तेज चलता है।

(३) वह चलते-चलते खा भी रहा है।

(४) उसका चलना देखकर लोग हँसते हँसते लोट-पोट हो जाते हैं।

२. निम्न वाक्यों के खाली स्थानों को युग्म-पद क्रिया-विशेषणों द्वारा भरिये—

(१) वह आपके पास·········गया है।

(२) विद्यार्थी············सो गया।

(३) लड़की·········थक गई।

(४) पंखा ·······रुक गया।

(३) निम्न युग्म-पद क्रिया-विशेषणों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए। देखते-देखते, गाता-गाता, खेलते-खेलते और रोते-रोते।

गृहकार्य—इस पाठ में आये हुए युग्म पदों के अतिरिक्त अन्य कोई दस युग्म-पद क्रिया विशेषण खोजकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

व्याकरण पाठ योजना (४)

प्रकरण — विशेषण

परिचय — अर्थ एवं प्रयोग

कक्षा ६

पूर्व ज्ञान — (१) वाक्यों में संज्ञा एवं सर्वनाम शब्द से बालक परिचित हैं।

(२) बालक सामान्य भाषा में विशेषण एवं उनके भेदों के प्रयोग से परिचित हैं।

पाठ्य वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ट व्यवहार	शिक्षक क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
प्रत्यय : १. वे शब्द जो किसी सर्वनाम या संज्ञा की विशेषता बताते हैं २. विशेषण शब्द कैसे, कितना, किसको, कहाँ का, कब का आदि प्रश्नों का उत्तर देता हैं।	१. ज्ञान : वाक्य में प्रयुक्त उन शब्दों को पहचान लेता है जो किसी भी शब्द की विशेषता बताते हैं। २. अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से विशेषणों में भेद करता हैं।	निम्न गद्यांश को पढ़ने का आदेश देता हैं— दशरथ एक प्रतापी राजा थे। उनके तीन रानियाँ थी। राजा के पास बहुत धन था। प्रश्न — १. इस गद्यांश में किस राजा का वर्णन किया गया हैं ? २. दशरथ कैसे राजा थे ?	पढ़ता हैं। पहिचानता है। अनुमान करता हैं।	लपेट पट पर लिखे वाक्य "	१. विशेषण किसे कहते हैं ? २. विशेषण और विशेष्य में क्या अन्तर है ?

पाठ्य वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ट व्यवहार	शिक्षक क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
३. किसी भी शब्द की विशेषता दो प्रकार से जानी जा सकती हैं। (क) अर्थ की दृटि से। (ख) प्रयोग की दृष्टि से।	३. साधारणी करण करता है कि कैसा कितना आदि प्रश्नों के उत्तर वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। तथा	३. प्रतापी शब्द किस शब्द की विशेषता प्रकट करता हैं ?	पहचानता हैं।	लपेट पट पर लिखे वाक्य	३. किस प्रकार के प्रश्नों द्वारा— विशेषण को पहचाना जा सकता हैं।
		४. दशरथ के कितनी रानियां थीं ?	”		
		५. राजा के पास कितना धन था ?			
	४. वे संज्ञा, सर्वनाम की विशेषता बताते हैं !	६. 'चार' और 'बहुत' शब्द किन शब्दों की विशेषता प्रकट करते हैं ?	अनुमान करता हैं।		
४. विशेषण जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं, वे विशेष्य कहलाते हैं।		कथन—वे शब्द जो संज्ञा, सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं, विशेषण कहलाते हैं तथा जिन की वे विशेषता बतलाते हैं, विशेष्य कहलाते हैं।	विशेषण तथा विशेष्य के अर्थ को ग्रहण करता हैं।		

पाठ्य वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ठ व्यवहार	शिक्षक क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
		प्रश्न—		लपेट पट पर लिखे वाक्य	
		१. कौन-कौन से शब्द विशेषण हैं ?	पहिचानता है।		
		२. कौन से शब्द विशेष्य हैं ?			
		निम्न वाक्य पढ़ने का आदेश देता है।			
		१. राम एक अच्छा लड़का है।			
		२. ताज महल सुन्दर इमारत है।	पढ़ता है		
		३. यह लाल पेन है।			
		प्रश्न —			
		१. राम कैसा लड़का है ?	पहिचानता है।		
		२. ताज महल कैसी इमारत है ?			
		३. पेन कैसा हैं ?			
		४. अच्छा, सुन्दर और लाल शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है ?	समाधान करता है।		
		५. उक्त वाक्यों में आये हुए विशेष्य शब्द कौन से हैं ?	विशेष्य में 'कैसा' लगाने से विशेषण ज्ञात होता है।		

पाठ्य वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ट व्यवहार	शिक्षक क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
		६. विशेष्य की विशेषता किस प्रकार के प्रश्नों से जानी गई है ?		लपेट पट पर लिखे वाक्य	
		७. इससे आप क्या निष्कर्ष निकालते हो ?			
		वाक्य पढ़ने का आदेश देता है—	पढ़ता है।		
		१. यह चार लिटर दूध है।			
		२. मेज पर तीन पुस्तकें हैं।			
		३. कक्षा में चालीस छात्राएं हैं।			
		प्रश्न पूछता है—			
		१ दूध कितना है ?			
		२. मेज पर कितनी पुस्तकें हैं ?			
		३. कक्षा में कितनी छात्राएं हैं ?			
		पढ़ने का आदेश देता है—			
		१. लाल किला दिल्ली में है।			
		२. भारत की प्रधान मन्त्री इन्दिरा गाँधी हैं।			
		३. लक्ष्मी बाई की समाधि झाँसी में है।			

पाठ्य वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ट व्यवहार	शिक्षक क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
		प्रश्न— १ लाल किला कहाँ है ? २. इन्दिरा गाँधी कहाँ की प्रधान मन्त्री हैं ? ३. लक्ष्मी बाई की समाधि कहाँ है ? ४. दिल्ली, भारत, झाँसी व्याकरण की दृष्टि से क्या हैं ? ५. उक्त वाक्यों में आये हुए विशेष्य कौन से हैं ? ६. विशेष्य की विशेषता किस प्रकार के 'प्रश्न' से जानी गई हैं। ७. इससे तुम क्या निष्कर्ष निकालते हो ?	पहिचानता है। समाधान करता है।	लपेट पट पर लिखे वाक्य	
		वाक्य पढ़ने का आदेश देता है— १. राम सिंह का लड़का इंजिनियर है। २. मोटर का इंजन बिगड़ गया। ३. दशरथ के पुत्र राम बड़े न्यायी थे।	पढ़ता है।		

पाठ्य वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ट व्यवहार	शिक्षक क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
		प्रश्न— १. किसका लड़का इंजिनियर है ? २. इंजन किसका बिगड़ गया ? ३. किसके पुत्र बड़े न्यायी थे ?	पहिचानता है।	लपेट पट पर लिखे वाक्य	
		४. रामसिंह, मोटर, दशरथ शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या हैं ? ५. उक्त वाक्यों में आये हुए विशेष्य शब्द कौन से हैं ?	समाधान करता है।		
		६. विशेष्य की विशेषता किस प्रकार के प्रश्न से जानी गई है ? ७. इससे तुम क्या निष्कर्ष निकालते हो ?	निष्कर्ष निकालता है कि विशेष्य में 'किसका' लगाने से विशेष्य ज्ञात होता है		
		वाक्य पढ़ने का आदेश १. भारत १९४७ में स्वतंत्र हुआ। २. गांधी जयन्ती २ अक्टूबर को मनाई जाती है। ३. राधा को कल २ बजे स्कूल जाना है।			
		प्रश्न— १. भारत कब स्वतंत्र हुआ ? २. गांधी जयन्ती कब मनाई जाती है ?	पहिचानता है। ,,		

पाठ्य वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ट व्यवहार	शिक्षक क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
		३. राधा को स्कूल कब जाना है ? ४. १६४७, २ अक्टूबर, २ बजे व्याकरण की दृष्टि से क्या हैं ? ५. उक्त वाक्यों में आये हुए विशेष्य शब्द कौन से हैं ? ६. विशेष्य की विशेषता किस प्रकार के प्रश्न से जानी गई है ? इससे तुम क्या निष्कर्ष निकालते हो ?	समाधान करता है। निष्कर्ष निकालता है कि विशेष्य में 'कब' लगाने से विशेषण ज्ञात होता है।	लपेट पट पर लिखे वाक्य	
		कक्षा अभ्यासार्थ निम्न शिक्षण-परिस्थितियाँ प्रस्तुत करता है— निम्न वाक्यों में से विशेषण छाँटिये— १. रमा चतुर लड़की है। २. सीमा कुशाग्र बुद्धि की है। ३. अरबी घोड़े तेज दौड़ते हैं। ४. मन्दिर में प्रतिदिन प्रसाद बँटता है। ५. हरियाणा की भैंस बहुत दूध देती हैं। निम्न वाक्यों में विशेषण भरिये— १. सोहन ……लड़का है। २. यह…………आम है। ३. कक्षा में…………विद्यार्थी है। ४. …………पेन्सिल लाओ।			

व्याकरण पाठ योजना (५)

प्रकरण—विशेषण रचना की दृष्टि से (समास द्वारा निर्मित)

कक्षा—६

पूर्वज्ञान—१. विभिन्न शब्द-भेदों से परिचित हैं।
२. विशेषण का अर्थ एवं उसके विभिन्न प्रकारों से परिचित है।
३. सामासिक पदों से परिचित हैं।

पाठ्य विषय-वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ट व्यवहार	अध्यापन क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
प्रत्यय— १. संज्ञा के अंत में 'हीन' एवं 'निष्ठ' लगाने से बने हुए सामासिक पद विशेषण का कार्य करते हैं।	ज्ञान— १. वाक्यों में प्रयुक्त उन विशेषणों को पहचान लेता है जो 'हीन' एवं 'निष्ठ' शब्दों के योग से बने हैं	पढ़ने का आदेश देता है— लाल बहादुर शास्त्री भारत के एक महान् व्यक्ति थे। वे एक धर्मनिष्ठ और दम्भहीन व्यक्ति थे।	पढ़ता है।	लपेट पट पर लिखे वाक्य एवं गद्यांश	प्रश्न— १. किन पदों के योग से सामासिक पद विशेषण का कार्य करने लगते हैं ?

पाठ्य विषय-वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ट व्यवहार	अध्यापन क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
२. 'हीन' से बनें विशेषण सामासिक पद में 'से' विभक्ति का लोप हो जाता है।	२. साधारणी करण	प्रश्न करता है—			
	(अ) संज्ञा के अन्त में 'हीन' और 'निष्ठ' लगाने से बने सामासिक पद विशेषण का कार्य करते हैं।	१. इस गद्यांश में कौन कौन से शब्द विशेषण हैं ?	पहिचानते हैं।		२. हीन और निष्ठ युक्त सामासिक पदों में कौन से शब्दों का लोप हो जाता है।
		२. महान् शब्द किस प्रकार का विशेषण है ?	पुनः स्मरण करते हैं।		
३. 'निष्ठ' से बने विशेषण सामासिक पद में 'में' विभक्ति का लोप हो जाता है।		३. धर्मनिष्ठ और दंभहीन शब्दों में कौन कौन से पद हैं ?	परिवेक्षण करते हैं।		
		४. इस प्रकार के पदों से निर्मित शब्दों को हम व्याकरण में क्या कहते हैं ?	पुनः स्मरण करते हैं।		
	(ब) इस प्रकार बने हुए विशेषण में 'में' और 'से' का लोप हो जाता है।	५. ये सामासिक पद यहाँ पर किस शब्द भेद का कार्य कर रहे हैं ?			
		६. इस प्रकार के सामासिक पद विशेषण का कार्य कब करने लगते हैं ?			
	प्रयोग—				
	(अ) नवीन वाक्यों				

पाठ्य विषय-वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ट व्यवहार	अध्यापक क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
	में उन विशेषणों का चयन कर लेता है, जो समास द्वारा निर्मित हैं।	लक्ष्य केन्द्रित करता है— आज हम उन नियमों से परिचित होंगे जिनसे धर्मनिष्ठ और दम्भहीन जैसे सामासिक पद विशेषण का कार्य करने लगते हैं।	लक्ष्य केन्द्रित होते हैं।		
	(ब) संज्ञा में 'हीन' और 'निष्ठ' लगा कर अन्य सामासिक विशेषणों की रचना कर लेते हैं।	पढ़ने का आदेश देता है— १. मोहन धन हीन व्यक्ति है। २. बल हीन राष्ट्र सदैव दूसरे राष्ट्रों का दास रहता है। ३. बुद्धिहीन छात्रों को कक्षा में पढ़ाना कठिन कार्य है। ३. शीलहीन व्यक्ति समाज के लिए अभिशाप है।	पढ़ते हैं।		
		प्रश्न पूछता है— १. धनहीन शब्द व्याकरण के अनुसार क्या है।			

पठित विषय-वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ट व्यवहार	अध्यापक क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
		२. यह समास किस व्यक्ति की विशेषता बता रहा है ? ३. यह किस शब्द-भेद का कार्य कर रहा है ? ४. इस समास का प्रथम पद व्याकरण के अनुसार क्या है ? ५. 'धन' शब्द किस पद का योग होने पर विशेषण का कार्य करने लगता है ? ६. 'बलहीन,' 'बुद्धिहीन', 'शीलहीन' व्याकरण की दृष्टि से क्या हैं ? ७. यह समास किन शब्द-भेदों की विशेषता बता रहे हैं ? ८. ये समासिक पद यहाँ पर कौन से शब्द-भेद का कार्य कर रहे हैं ? ९. अतः संज्ञा के अन्त में कौन से पद का योग करने से सामासिक विशेषण का कार्य करने लगता है ?	साधारणीकरण करते हैं — कि संज्ञा पद में हीन पद का योग करने से सामासिक पद विशेषण का		

पठित विषय-वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ट व्यवहार	अध्यापक क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
			कार्य करता है।		
		प्रश्न करता है।			
		१. धनहीन और बलहीन में कौन से शब्द का लोप हुआ है ?	पहिचानते हैं।		
		२. बुद्धिहीन और शीलहीन सामासिक पदों में कौन से शब्द का लोप हुआ है ?	,,		
		३. यह समस्त सामासिक पद कौन से शब्द का कार्य कर रहे हैं ?	निष्कर्ष निकालते हैं।		
		४. अत: ऐसे सामासिक पदों में जो विशेषण शब्द का कार्य करते हैं, कौन से शब्द का लोप हो जाता है ?	साधारणी करण करते है कि हीन वाले सामासिक पद जो विशेषण का कार्य करते हैं उन में 'से' विभक्त का लोप होजाता है।		
		निम्न लिखित गद्यांश में से उन समासों को छंटवाता है, जो विशेषण का कार्य करते हैं—			

पठित विषय-वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ट व्यवहार	अध्यापक क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
		"एक सम्पत्ति हीन व्यक्ति आज के युग में सबसे दुखी प्राणी है। वह गुणहीन न होने पर भी दूसरों के आदर का पात्र नहीं बन पाता है। परन्तु ऐसे अनेक व्यक्ति हैं जो 'विवेकहीन' होने पर भी दूसरों का आदर इसलिए प्राप्त कर लेते हैं क्योंकि उनके पास धन होता है।"	पढ़ते हैं।		
		गद्यांश पढ़ने का आदेश देता है— गाँधी जी एक "सत्य निष्ठ' और 'धर्म-निष्ठ व्यक्ति थे। उनके द्वारा प्रतिपादित बेसिक शिक्षा छात्रों को 'कर्मनिष्ठ' बनाती है।' 'श्रमनिष्ठ' किसान को वह भगवान का रूप मानते थे।	पढ़ते हैं।		
		१. इस गद्यांश में कौन से सामासिक पद हैं।	पहिचानते हैं।		
		२. 'सत्यनिष्ठ' एवं 'धर्मनिष्ठ' किस व्यक्ति की विशेषता बता रहे हैं?	"		

पठित विषय-वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ट व्यवहार	अध्यापक क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
		३. अतः यह किस शब्द भेद का कार्य कर रहे हैं ?	निष्कर्ष निकालते हैं ।		
		४. यह सामासिक पद व्याकरण के अनुसार क्या हैं ?	पुनःस्मरण		
		५. सत्य एवं धर्म पदों में कौन से पद का योग करने से वे विशेषण का कार्य करने लगते हैं ?	पहिचानता है ।		
		६. कर्मनिष्ठ एवं श्रमनिष्ठ किस पद की विशेषता बता रहे हैं ?			
		७. अतः यह किस शब्द भेद का कार्य कर रहे हैं ?	निष्कर्ष निकालते हैं ।		
		८. यह सामासिक पद व्याकरण के अनुसार क्या है ?	निष्कर्ष निकालते हैं ।		
		९. कार्य एवं श्रम पदों में कौन से पद का योग करने से विशेषण का कार्य करने लगते हैं ?	साधारणीकरण करते हैं कि संज्ञा पद में 'निष्ठ' पद का योग करने से सामासिक पद विशेषण का कार्य करता है ।		

पठित विषय-वस्तु	उद्देश्य एवं विशिष्ट व्यवहार	अध्यापक क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	सहायक सामग्री	मूल्यांकन
		प्रश्न—			
		१. 'सत्यनिष्ठ' एवम् धर्मनिष्ठ में कौनसी विभक्ति का लोप हुआ है।	निष्कर्ष		
		२. 'कर्मनिष्ठ' और 'श्रमनिष्ठ' में कौनसी विभक्ति का लोप हुआ है ?	,,		
		३. यह समस्त सामासिक पद कौन से शब्द भेद का कार्य कर रहे हैं ?			
		४. अतः ऐसे सामासिक पदों में जो विशेषण का कार्य करते हैं, कौन सी विभक्ति का लोप हो जाता है ?	साधारणी करण करते हैं कि निष्ठ वाले सामासिक पद जो विशेषण का कार्य करते हैं उनमें 'में' विभक्ति का लोप हो जाता है		
		निम्नलिखित गद्यांश में से उन सामासिक पदों को छंटवाता है जो विशेषण का कार्य करते हैं—			
		आत्म निष्ठ व्यक्ति भगवत् निष्ठ भी होता है। वह धन निष्ठ नहीं होता है। ऐसा व्यक्ति स्वभाविक रूप से कर्त्तव्य निष्ठ होता है।	छाँटते हैं।		

प्रथम कार्य गोष्ठी के सदस्य (१८-१-७० — २१-१-७०)

१. श्री अनिल विद्यालंकर (विशिष्ट सदस्य)
रीडर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली

२. श्री कृष्ण गोपाल बीजावत
राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, अजमेर

३. श्री रवीन्द्र अग्निहोत्री
वनस्थली विद्यापीठ प्रशिक्षण महाविद्यालय, वनस्थली (राजस्थान)

४. श्री मूलचन्द शर्मा
श्री जैन शिक्षक प्रशिक्षण महा विद्यालय, अलवर

५. श्री रामेश्वर लाल गौतम
श्री जैन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, अलवर

६. श्री राधा मोहन जी पुरोहित
राज्य शिक्षा संस्थान, उदयपुर

७. कुमारी चन्द्र लेखा सक्सेना
शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गुलाबपुरा

८. श्री महावीर प्रसाद उपाध्याय
जवाहर लाल नेहरु शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा

९. श्रीमती स्वराज्य देवी सक्सेना एवं

१०. श्री ओमप्रकाश सेठ
लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, दबोक (उदयपुर)

११. श्रीमती पुष्पा मंगल एवं

१२. श्री अरुण कुमार शर्मा
नेहरू प्रशिक्षण महाविद्यालय, हिण्डौन (राजस्थान)

द्वितीय कार्य गोष्ठी के सदस्य (१८-१-७१—२०-१-७१)

१. डा० रामशकल पांडेय (विशिष्ट सदस्य)
आर. बी. एस. प्रशिक्षण महाविद्यालय, आगरा

२. श्री के. जी. शर्मा
मेरठ कॉलेज, मेरठ

३. श्री पी. एन. रॉय
आर. बी. एस. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, आगरा

४. श्री बी. डी. मिश्र
तिलकधारी कॉलेज, जौनपुर

५. श्री रामजीलाल शर्मा
श्री बजरंग शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डींग (भरतपुर)

६. कु० ज्योत्स्ना जोशी
हितकारी सहकारी महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

७. श्री एस० के० त्रिवेदी
परीख शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर

८. श्री श्रीवास्तव
जामिया मिलिया प्रशिक्षण महाविद्यालय, दिल्ली

विविध कार्य समितियों के सदस्य :

पाठ-संकेत तैयार करने की दृष्टि से निम्नांकित समितियों का निर्माण किया गया था और प्रत्येक समिति द्वारा तैयार किया गया पाठ-संकेत सामूहिक विचार-विमर्श एवं परिचर्चा के पश्चात् स्वीकार किया गया।

(१) गद्य समिति :

१. श्री ओम प्रकाश सेठ
२. श्री भुवनेश्वर गुप्त
३. श्रीमती स्वराज्य सक्सेना

(२) कहानी एवं एकांकी समिति :

१. श्री कृष्ण गोपाल बीजावत

४. श्री महावीर उपाध्याय

(३) कविता समिति :

१. श्री मूलचन्द शर्मा
२. श्री रामेश्वर दयाल गौतम
३. श्री रवीन्द्र अग्निहोत्री

(४) व्याकरण समिति (विशेषण) :

१. श्री कृष्ण गोपाल शर्मा
२. कु० ज्योत्स्ना जोशी
३. श्री एस. के. त्रिवेदी

(५) व्याकरण समिति (अव्यय) :

१. श्री बी. डी. मिश्र
२. श्री पी. एन. रॉय
३. श्री रामजी लाल शर्मा
४. श्री श्रीवास्तव

संयोजक

१. श्री निरंजन कुमार सिंह—प्राध्यापक, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर
२. श्री जगमोहन सिंह सक्सेना—प्राध्यापक, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर